ज्योति-पुंज

(आदरणीय श्री पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्रीमती कमला नेहरू जी के जीवन एवं उत्सर्ग पर आधारित महाकाव्य)

डॉ० श्रीमती प्रतिभा गर्ग

प्रतिभा प्रकाशन हैदराबाद

प्रकाशक :
प्रतिभा प्रकाशन
7-1-50/बी०
अमीरपैंठ, हैदराबाद (आ० प्र०)

प्रथम संस्करण १९८२

मूल्य : पैंतीस रुपये

मुद्रक :
प्रदीप प्रिंटिंग प्रेस
7/B प्रहलाद नगर
मेरठ शहर 250 002
फोन : 75447

पूज्य पिता स्व० श्री प्यारेलाल गुप्ता

एवं

श्रद्धेय माता श्रीमती तारावती गुप्ता

के

चरणों में सादर समर्पित

काव्य-पुष्प

सरस्वती–वन्दना

"वीणावादिनी माँ शतरूपा
वन्दन में खारी कण हैं,
वरद-हस्त आकांक्षिणी द्वारे
अर्चन में अभिनन्दन है।

निर्झरिणी में भाव हृदय के
पगतलस्पर्शी आकुल हैं,
पूर्ण करो साधना 'ज्योति' में
जीवन का मधु अविरल है।"

—प्रतिभा

प्रधान मंत्री

नई दिल्ली,

7 जनवरी, 1977

प्रिय श्रीमती प्रतिभा गर्ग,

आपका 30 दिसम्बर का पत्र और इसके साथ "ज्योतिपुंज" काव्य की पाण्डुलिपि देखने को मिली। आपका प्रयास सराहनीय है।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीया,

(इन्दिरा गांधी)

डा० (श्रीमती) प्रतिभा गर्ग,
6-2-666, चिन्तलबस्ती,
डोरताबाद,
हैदराबाद-500 004.

'अमर' जवाहर 'इन्दिरा' गाथा

स्वर्णाक्षर में 'ज्योतिपुंज' के,

'कमला' का उत्सर्ग, प्रेरणा

काव्य निकट जगती जीवन के।

'प्रतिभा' की निर्झरिणी ने बाँधा

असीम को फिर ससीम में,

शुभ्र चेतना, 'ज्योतिपुंज' की

'ज्योति' जगाती जड़ चेतन में।

(पद्मभूषण)

दूरभाष : ५२८१६

डॉ० रामकुमार वर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी०लिट्०
साहित्य वाचस्पति

साकेत,
४, प्रयाग स्ट्रीट
इलाहाबाद-२

पूर्व प्रोफेसर—
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
मास्को अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान
सीलोन यूनिवर्सिटी
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

ता० २८-८-८०

पूर्व अध्यक्ष—शासी मंडल, उ० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ० प्र०

शुभ कामना

डॉ० (श्रीमती) प्रतिभा गर्ग ने अत्यन्त सु-ललित तथा संवेदना-सम्पन्न शैली में 'ज्योति पुंज' महाकाव्य की रचना की है। इसमें स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर श्रीमती इन्दिरा गाँधी तक के ऐतिहासिक काल-खंड को विविध परिस्थितियों की गति-विधियों के साथ बड़ी मनोज्ञता से चित्रित किया गया है।

बारह सर्गों के इस महाकाव्य में जहां घटनाओं की संसृष्टि सागर में तरंगों की भांति आलोड़ित होती है, वहाँ रसात्मकता की चारु चन्द्रिका में काव्य की शोभा रजत-राशि की भाँति तरंगित होती है। स्वर्गीय कमला जी की करुणा इस महाकाव्य की गरिमा ही नहीं, प्रेरणा भी ज्ञात होती है। प्रकृति-चित्रण में प्रतिभा ने अपने नाम को चरितार्थ किया है।

इस रचना को ऐतिहासिक महत्व तो मिलेगा ही, साहित्य की दृष्टि से भी इसे एक सफल काव्य-कृति का गौरव प्राप्त होगा।

इस 'ज्योति पुंज' की रचना के लिए मैं प्रतिभा जी को हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ।

साकेत, इलाहाबाद—२
रक्षा-बन्धन १९८०

ह०
(रामकुमार वर्मा)

डॉ० प्रतिभा गर्ग का वृहद् काव्य 'ज्योति पुंज' कमला नेहरू और उनके माध्यम से इस देश के राष्ट्रीय नेता जवाहरलाल नेहरू के जीवन का मर्मांकन करने वाला काव्य है। कवयित्री ने भावमय रीति से कमला जी और नेहरू जी के आत्मीय क्षणों की अभिव्यक्ति दी है। इस छन्दमयी अभिव्यक्ति में प्रकृति के मनोरम चित्र भी हैं। काश्मीर के इस परिवार के लिये लिखे गये काव्य में प्रकृति की उस रम्यस्थली का अंकन होना यों भी अनिवार्य था, किन्तु डॉ० गर्ग को प्रकृति के प्रति सहज प्रेम प्रतीत होता है। उनके सर्ग प्रायः प्रकृति-वर्णन से आरम्भ होते हैं।

श्रीमती गर्ग ने सरल भाषा और गतिमान छन्दों में बड़ी कुशलता से उन अन्तरंग क्षणों को उतार लाने का प्रयास किया है; किन्तु भाषा की सरलता उनके रम्य रूप की सुरक्षा की ओर अपनी ठेठता के कारण अप्रवृत्त नहीं रही। उनकी भाषा ठेठ नहीं, मृदुल और भावात्मक है। सहज अलंकरण उनकी भाषा का सद्गुण है।

मुझे विश्वास है इस काव्य का यथोचित सम्मान होगा।

ह०
(डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित)

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
पुणे विद्यापीठ, गणेशीखण्ड,
पुणे—४११ ००७

Dr. Ram Niranjan Pandoya
M.A. Sans., M.A. Hindi, LL.B. (B.H.U)
Sahitya Shastri, Vedant Shastri, Ph.D.(Nagpur)
Retired Professor & Head, Dept. of Hindi,
Osmania University, HYDERABAD-7.

Phone : 62458
1-8-702/19, Nallakunta
HYDERABAD-500 004. (A.P.)
भाद्र अमा विक्रम २०३७

स्वस्त्ययन

'ज्योति पुंज' में स्वर्गीय पंडित मोतीलाल जी नेहरू, स्वरूपरानी जी नेहरू और सती कमला जी का उल्लेख है। स्वर्गीय मोतीलाल जी को मैंने देखा और उनका प्रभाव मुझ पर है। स्वर्गीया स्वरूपरानी जी को और संभवतः कमला जी को भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कम से कम एक बार तो अवश्य देखा। प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी के कारण देश की सब विभूतियों को वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में निमन्त्रित किया करते थे। श्रद्धेया स्वरूप रानी जी के एक ही पावन दर्शन का प्रभाव मुझ पर आज तक बना हुआ है। पंडित मोतीलाल जी के परिवार का उल्लेख आधुनिक भारतीय इतिहास में सदा होता रहेगा।

'ज्योति पुंज' की साधिका की साधना समृद्ध हो चुकी है। इस तथ्य का प्रमाण 'ज्योति पुंज' स्वयं है। अरुणोदय की नवल रश्मियों को सुभग, प्रभात को जगाने के लिये, प्रस्थान-पथ पर सजी हुई, इस साधिका के हृदय के नयनों ने देखा है। हरीतिमा ओढ़े सुमनों के विहास का उसने साक्षात्कार किया है। शैलांचल की नीरवता के असंख्य विहाग-रागों को उसके हृदय के कानों ने सुना है। प्रेमी युगल के जीवन के मधुमय सुख को खिलते हुए उसने अनुभव किया है। मनुहार भरे स्वरों के मौन को उसने पहचाना है। किलकारी और रुनझुन से घर आंगन भरते हुए शिशु के आकर्षण से उसका हृदय प्रभावित हुआ है। बेटे के बंधे हुए सेहरे से माता-पिता के अरमानों को सजते हुए देखकर उसका मन-मानस तरंगित हुआ है। दाम्पत्य जीवन के सुन्दर-पावन अनुराग की माधुरी को उसने अपनी कला के सुमनोपहार अर्पित किये हैं। श्रीनगर को सँवारने वाली प्रकृति की शोभा का नीराजन उसने अद्‌भुत ढंग से किया है। भावी जननी की गरिमा को उसने अपनी श्रद्धा अर्पित की है। तपस्विनी कमला के पावन तप के सम्मुख, प्रणामाञ्जलि भर कर, विनम्र हो, वह झुकी है। देशभक्तों की बलिदान-भावना और प्राणोत्सर्ग के गौरव पर उसे पवित्र गर्व है। इतिहास की इतिवृत्तात्मकता का उसने नैसर्गिक शृंगार किया है। अमला कमला को, स्वर्गादपि गरीयसी भारतमाता के लिये अपने प्राणों को निछावर करते हुए देखकर उसके प्राण तड़फ उठे हैं। मृत्यु की गोदी में समाती हुई कमला की गरिमा का गुंजन सुन कर उसके कान पवित्र हुए हैं। जवाहर और इन्दिरा के युग का सरस आकलन उसके कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

रससिद्ध कवि प्रतिभा जी की साधना में चन्द्र-सूर्य बन कर उदित हो रहा है। जीवन के समग्र अंचल, अपने सहज सौरभ का प्रसार उनकी कला के आयामों पर बड़े मार्मिक ढंग से कर रहे हैं। परमात्मा से हार्दिक प्रार्थना है कि 'ज्योतिपुंज', असंख्य रूप और रंग धारण कर उनकी कला-सृष्टि को अपरिसीम सुन्दर रत्नों से सुशोभित करे। मिले उन्हें वाणी-वरदान।

ह०
(रामनिरंजन)

डॉ० केसरी नारायण शुक्ल
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

"आप में काव्य-प्रतिभा है, यह उस समय ज्ञात हुआ था जब मैं आपके पी० एच० डी० के शोध प्रबन्ध का परीक्षक था। कवि होने के साथ-साथ आप सुधी आलोचक भी है। काव्य 'ज्योतिपुंज' के प्रकाशन और प्रसारण के लिये मेरा हार्दिक आशीर्वाद और शुभ कामनायें आप के साथ हैं।

भवदीय
ह०
(केसरी नारायण शुक्ल)

आमुख

"**ज्योतिपुंज**" काव्य और इतिहास की सम्मिलित प्रतिध्वनि है। बारह सर्गों का यह काव्य यद्यपि महामहिम पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म से प्रारम्भ होता है किन्तु माननीया श्रीमती कमला नेहरू के त्याग उत्सर्ग और प्रेरणा को प्रकाश में लाना ही प्रस्तुत काव्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानों नेहरू कुल की सफलता के वृक्ष को कमला की मौन साधना और अबोले आँसुओं ने सींचा है। आधुनिक युग में गुप्तजी ने अपनी लेखनी की स्नेहानुभूति से उर्मिला और यशोधरा के मुख पर पड़े वंचना के घूंघट को उठाया है। "**ज्योतिपुंज**" की 'कमला' इस उपक्रम की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित "**मेरी कहानी**" की कुछ पंक्तियों ने काव्य साधिका के मर्म को झकझोर दिया है—
"**कमला को—जिसकी अब याद ही रह गई।**" अन्य स्थानों पर भी नेहरू जी की व्यथित वेदना झंकृत है। निःसंदेह कमला ने जीवन में पाया कम और खोया अधिक। मृत्युपरान्त स्वप्निल कमला का प्रेरणापूर्ण संदेश मानवता की चिरसंचित निधि है। वह वास्तविक अर्थों में "**जवाहर**" की पत्नी और "**इन्दिरा**" की माँ हैं।

"**जवाहर**", "**कमला**" और "**इन्दिरा**" के सागर से विशाल गहन गंभीर जीवन को इस लघु काव्यधारा में बाँधने का प्रयास गागर में सागर भरने के सदृश है। भार रहित सुमन अपने सौन्दर्य सौरभ से जगती की कटुता को अपनी पांखुरियों में समाहित कर लेता है। "**ज्योतिपुंज**" ने इस तथ्य को स्वीकारते हुए ऐतिहासिक सत्यों को काव्य के परिवेश में ग्रहण किया है। काव्य के पार्श्व में कांग्रेस का इतिहास, वर्णित तिथियाँ और सन् विशुद्ध ऐतिहासिक है। "**इन्दिरा**" सर्ग की 'इन्दिरा' जवाहरलाल की आशा और कमला के स्वप्न का वास्तविक प्रतिरूप है। सौ पुत्रों से अधिक मान बढ़ाने वाली नेहरू कुल की यह दुहिता स्वतन्त्रता की रक्षा करने वाली "**लक्ष्मीबाई**" है। काव्य साधिका के कवि हृदय ने पौरुषमयी दृढ़ता के आवरण को भेदकर श्रद्धेय इन्दिराजी के नारी सुलभ मनमोहक सौन्दर्य को भी वाणी देने की दृष्टता की है—

> **"नव किसलय में नवल पुष्प सी, नव पराग की मृदु अरुणाई।**
> **"कमला" की अपूर्ण इच्छायें, रूप, "इन्दिरा" का ले आई॥**
> **दिनकर का ले तेज रूप में, चन्द्रकिरण की नवल ज्योत्सना।**
> **नयनों में अनुराग विरागी, संकल्पों की सजग कल्पना॥**

---

1. ज्योतिपुंज—सर्ग बारह "इन्दिरा"—पृ० ६६

आदरणीया इन्दिरा जी के व्यक्तित्व में नारियोचित सौन्दर्य, दया, ममता, उदारता और पौरुष की दृढ़ता एवं शक्ति का अद्‌भुत संगम है। सन् 1971 में पाकिस्तान के साथ बंगलादेश के लिए लड़ा गया युद्ध और उसकी गरिमामय विजय प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता का अद्वितीय उदाहरण है। लोकतंत्र की प्रतिनिधि के समक्ष जनकल्याण का प्रश्न सर्वोपरि है। सन् 1980 के चुनाव में पुन: विजय प्राप्त कर इन्दिरा जी ने इस सत्य को साकार किया है कि बादल का एक टुकड़ा सूर्य को एक क्षण के लिए भले ही आवर्त कर ले, किन्तु उसकी तेजस्विता शाश्वत् है। कृषिप्रधान देश भारत के कृषकों को "**अखिल भारतीय किसान-सम्मेलन**" के द्वारा संगठित कर माननीय वर्तमान प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपनी दूरदर्शिता और मर्मज्ञता से भारत की भोली-भाली ग्रामीण जनता को उचित मार्गदर्शन प्रदान किया है।

प्रस्तुत काव्य को शृंगार और वीर रस की गंगाजमुनी धाराओं ने प्रयाग के संगमस्थल की भाँति पुनीत और स्पृहणीय बनाने का प्रयास किया है। महामहिम श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी ने काव्य का विहंगावलोकन कर अपने अमूल्य शब्दों द्वारा मुझे जो प्रोत्साहन प्रदान किया है, उसके लिए हृदय से आभारी हूं। श्रद्धेय गुरुवर आदरणीय डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० रामनिरंजन पांडेय, डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित तथा डॉ० केसरी नारायण शुक्ल ने भी अपनी-अपनी शुभकामनाओं और आशीर्वाद के द्वारा साधिका को अमूल्य प्रेरणा प्रदान की है। इस अवसर पर मुझे अपने स्वर्गीय पूज्य पिता श्री प्यारेलाल गुप्ता की स्मृति विह्वल बना रही है जिन्होंने समाज की रूढ़ियों और कुप्रथाओं से संघर्ष कर मुझे उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ओर प्रेरित करके मुझमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की आत्मज्योति को प्रदीप्त किया। आदरणीया माता श्रीमती तारावती गुप्ता ने स्वरचित भजन और छोटी-छोटी कविताओं के द्वारा उस वृक्ष का बीजारोपण किया जो आज '**ज्योतिपुंज**' के रूप में हिन्दी साहित्य जगत के समक्ष प्रस्तुत है। अत: '**ज्योतिपुंज**' का प्रदीप ओजस्वी जनक और जननी के चरणों में सादर समर्पित है। काव्य प्रकाशन में मुझे अपनी आदरणीय मां, पति, भाई, भाभी तथा बहनों से पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। मुख पृष्ठ के चित्रांकन में शांति निकेतन से शिक्षा प्राप्त छोटी बहन सुषमा के पति श्री योगेन्द्र कुमार ने अपनी मौलिक सूझ-बूझ का परिचय दिया है।

यदि प्रकाशकों ने सहयोग दिया होता तो सम्भवतः **'ज्योति पुंज'** आज से चार-पाँच वर्ष पूर्व पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो सकता था। काव्य-प्रकाशन की स्थिति अनुकूल न देखकर साधिका के संवेदनशील हृदय ने निश्चय किया कि अपनी पुस्तकों के लिए प्रकाशन का भार हम स्वयं वहन करेंगे। **"प्रतिभा प्रकाशन"** की स्थापना के मूल में मर्माहत हृदय की यही भावना प्रमुख रही है। इस आत्मविश्वास ने ही कलम को साधिका की 'ज्योति' प्रदान की है—

"हमसे ही प्रकाशक हैं,
प्रकाशक से हम नहीं।"

'प्रदीप प्रिन्टिंग प्रेस' मेरठ ने यद्यपि अपनी सामर्थ्यानुसार अच्छे से अच्छा कार्य करने का प्रयास किया है किन्तु दूरी के कारण **'प्रूफ रीडिंग'** मेरे द्वारा सम्भव नहीं थी। अतः त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूं और अपने सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक रूप से आभारी हूँ।

प्रतिभा-सृजन का चिर सुन्दर रूप **'ज्योतिपुंज'** **"प्रतिभा-प्रकाशन"** द्वारा माँ भारती के चरणों में सहर्ष अर्पित है। पता नहीं क्यों ऐसा प्रतीत हो रहा है। मानों अन्तर में युग-युग से प्रज्ज्वलित 'ज्योति' **"ज्योतिपुंज"** का रूप लेकर विहँस उठी है तथा उसने हर्ष गौरव मिश्रित अनिवर्चनीय अनुभूति को साधना पथ की ओर प्रेरित किया है। अकिंचन साधिका की साधना स्वप्न को साकार करने में कहाँ तक सफल हो पाई है, यह निर्णय सहृदय पाठकों एवं काव्य-प्रेमियों पर निर्भर है। सत्य और कल्पना के अथाह सागर से जो मोती अंजली में भर पाई हूँ, वह चिर-नवीन रूप में **'ज्योतिपुंज'** की शोभा हैं। प्रस्तुत काव्य की कवयित्री ने भावाभिव्यक्ति को जीवन की सशक्त आवश्यकता के रूप में स्वीकारा है—

"कविता निर्झरिणी नयनों में
शाश्वत् प्रवाह की धारा है,
अंगार भरे स्वर अधरों में
अन्तर आहों की कारा है।"

भावना और कल्पना के शिखर से प्रस्फुटित सुख-दुःख की सहज सुन्दर रागात्मक रसानुभूति गीतों की **"मनुहार"** है तो अगीतों में **"चेतना के स्वर"** है। **"पाहन के फूल"** कहानी संग्रह प्रकाशित है तथा शोध प्रबन्ध **"छायावादी कवियों की नारी भावना"** शीघ्र ही 'प्रतिभा प्रकाशन' हैदराबाद से प्रकाशन पथ की ओर

अग्रसर हो रहा है । "जीवन क्या है ? एक कविता है, आंसू पीकर मुस्काता जा" के तत्व को हृदयंगम करने वाली काव्य साधिका माँ सरस्वती के उपासनागृह में इतना कहकर ही मौन है, नतमस्तक है, आशीर्वादाकांक्षी है—

"कमला ! तुममें ही चिर नारी
आशा विश्वास लिये उर में,
पी गरल दिया सौन्दर्य मधुर
नव राग भरे जीवन स्वर में ।
नत् चरणों पर पुलकित वैभव
नर अहं, शक्ति का असुर राग,
अभिनव शक्ति हो चेतन की
विहंसा सौरभ, सरसा सुहाग ।
भावना, कर्म और कर्त्तव्य
समन्वय में सब कुछ संभाव्य,
काव्य जीवन बन जाता स्वयं
और जीवन बन जाता काव्य ।"

—'प्रतिभा'

२८ फरवरी रविवार सन् १९८२
....
....

डॉ० श्रीमती प्रतिभा गर्ग
"प्रतिभा कुटीर"
7–1–50/B.
अमीरपैठ, हैदराबाद
(आ० प्र०)

अनुक्रमणिका

प्रथम सर्ग

जवाहर

जवाहर

अरुणोदय की नवल रश्मियाँ
चलीं जगाने सुभग प्रभात,
शुभ्र शिखर का हिम अलसाया
राग रागिनी बनें प्रपात।

विहँसे सुमन हरितिमा ओढ़े
पाँखुरियों में पीत पराग,
शैलांचल की नीरवता ने
गाये कितने राग विहाग।

'श्री' का सागर बना श्रीनगर
'झेलम' सुषमा का आगार,
इन्द्रधनुष की ओढ़े चूनर
मौन शिखा विहँसी साभार।

स्वर्ग प्रकृति का भारत भू पर
'काश्मीर' कानन कुसुमों का,
प्रेमी युगल विचरते प्रतिदिन
मधुमय सुख खिलता जीवन का।

'मोतीलाल' 'सरूपरानी' के
स्वप्न प्रणय संदेश बन गये,
सतरंगे सुषमा गुंठन में
अनबोले ही साज सज गये।

एक दिवस कुछ दूर चढ़ चले
दम्पति जब दिवसावसान में,
विस्मित देखा मौन तपस्वी
शान्त वान्त निर्जन कानन में।

'रानी' श्रद्धानत हो आई
नयन मूँदकर हाथ जोड़कर,
श्री चरणों में सुमन चढ़ाये
मौन रहे मनुहारभरे स्वर।

पुत्र रत्न का वरद तपस्वी
देकर बने साधना लीन,
युगल चमत्कृत निरख रहे थे
अंग अंग की शोभा पीन।

आई मार्गशीर्ष बढ़ी सप्तमी*
जन्म जवाहर विभव अपार,
नेहरू कुल ने दीप जलाये
हर्षोल्लास न पारावार।

'रानी' का मातृत्व विहँसता
भवनानन्द बढ़ रहा प्रतिपल,
जीवन का प्राप्तव्य खिल उठा
आशामय विश्वास अचंचल।

कितनी निधियों का मुँह खोले
'मोतीलाल' खड़े आँगन में,
वस्त्राभूषण द्रव्य सभी पा
मुदित मुग्ध था जन जन मन में।

---

* आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म १४ नवम्बर १८८९ मार्ग शीर्ष बढ़ी सप्तमी के दिन प्रयाग में हुआ था।

सुन्दर शिशु को निरख निरख
आशीर्वचन कहतीं वृद्धायें,
युग युग जिये जवाहर प्यारा
सुख सौभाग्य विमल यश गाये ।

किलक किलककर बचपन बीता
घर आँगन में रुनझुन रुनझुन,
वैभव स्वयं दास बन आया
दूर अभावों का आलिंगन ।

ग्यारह वर्ष रहा इकलौता
मात पिता का राजदुलारा,
पगतल में था स्वर्ग सलौना
जननी की आँखों का तारा ।

गृहपरिवर्तन कर आए सब
प्रमुदित मन 'आनन्द भवन' में,
बाल जवाहर सीख तैरना
नित्य खेलता स्नान कुँड में ।

मेधावी व्यवहारकुशल है
छात्र शिक्षिकायें कहती थीं ।
नित्य नई जिज्ञासा उर में
जीवन स्पन्दन भरती थी ।

भेद भाव गोरे काले का
जगा रहा था सजग कुतूहल,
बाल सुलभ संवेदन में भी
अनुभूति अनुदित थी अविरल ।

मन मयूर कर उठा नृत्य, जब
हुआ आगमन लघु भगिनी का,
स्नेह भाव अविराम बढ़ चला
चूम लिया मुख सुन्दर शिशु का।

मोतीलाल लौट यूरोप से
देख रहे अस्थैर्य देश में,
प्रायश्चित क्यों बिना पाप के
प्रश्न उठाया अभिजन कुल में।

क्या विदेश जाना ब्राह्मण का
ज्ञानार्जन भी एक अधर्म है,
बँधे हुए हम जंजीरों में
अंध-भक्ति में लिप्त कर्म है।

तर्क विवेक पिता से लेकर
विकसित मन होता स्निग्ध,
भ्राँति क्राँति में उलझा सुलझा
शैशव चित्र बनाता मुग्ध।

सुख सौभाग्य लिए था बचपन
स्नेहावर्षन अमृतमय था,
उच्चवर्ण उच्चाभिमान का
अहँ जवाहर के मन में था।

थियोसौफी से रहा प्रभावित
प्रश्न रहस्यभरे अन्तर में,
वीरों युद्धों की गाथायें
नव उन्मेष लिए अपने में।

भारत का भावी नेता फिर
छात्र बना 'हैरो कैम्ब्रिज' का,
खेल खेल में पढ़ते पढ़ते
विषय चुन लिया राजनीति का ।

रहा देश से दूर किन्तु थी
देश कार्य की तीव्र लालसा,
हाहाकार 'बंग' आन्दोलन
'तिलक' नाम गूँजा प्रवाल सा ।

विधि का विषय, अध्ययन चिन्तन
जीवन के उपक्रम अनजाने,
गति प्रवाह में बहते बहते
क्या पाथेय ? कौन यह जाने ।

बना विधिज्ञ देश का सेवक
यह नियति का खेल निराला,
इतना वैभव इतनी निधियां
अन्तर में पैठी एक ज्वाला ।

कार्य कार्य का द्वन्द्व मच रहा
वेणुनाद भरता मधु स्वर से,
शोषण, पीड़न, वर्णभेद क्यों
व्यथित, व्यग्र स्वर थे पुकार से ।

तरुण युवक थे लाल जवाहर
अंग अंग में भरी उष्णता,
ओजस्वी मुख, स्फीत शिरायें
स्वस्थ रक्त में भरी अरुणता ।

खोज रहा था सजग कुतूहल
हल अपने रीते तन मन का,
रजनी के स्वप्निल प्रहरों में
जाल बुन गया नित सपनों का।

निष्कलंक सौन्दर्य सुधा का
मानों विधु में अचपल था,
इन्द्रधनुष आँचल में सिमटा
प्यास जगाता प्रतिपल था।

यह अपूर्णता मानव मन की
मिलन राग का सम्मोहन है,
कोई कवि हो, या नितिज्ञ
सबमें यौवन का उद्वेलन है।

बने जानकर भी अनजाने
पौरुष मन का अहँ बन गया,
बीर जवाहर की गतियों में
प्रश्नचिन्ह कब, कौन बन गया।

द्वितीय सर्ग

कमला

कमला

सौन्दर्य सरोवर सरसा
एक रजत किरण मुस्काई,
कलियों ने घूंघट खोला
ले यौवन की अरुणाई।

बिखरीं अलकें अलसाईं
कुंकुम से करतीं बातें,
हम चले रिझाने किस को
लेकर मधु की सौगातें।

अनजान बना अपने से
नयनों का भोला बचपन,
झुक झुक स्वीकार रहा था
नव-जीवन का आमंत्रण।

यह कैसी चंचलता थी
स्वप्निल सरला आँखों में,
आकार मौन ने पाया
अनकही भावनाओं में।

उषा की प्रथम किरण जब
लेती अलसाया चुम्बन,
उजली कपोल चिकनाई
पल में रक्तिम जाती बन।

अधरों में विहँस रहा था
पाँखुरियों का स्पन्दन,
सस्मित गुलाब करता था
मानों प्रतिपल अभिनन्दन।

सरसिज का मधुरस आकुल
छलछला उठा अपने में,
मधुपों की गुन गुन गुंजन
इठलाई स्वर भरने में।

शैशव पूरित आंगन में
यौवन उभार ले आया,
एक मधुर रागिनी छेड़ो
कौतूहल सजग जगाया

छरहरी देह पर शोभित
था श्वेत वसन रेशम का
सिमटी सिमटी सी बाँहें
पहरा देतीं आँचल का।

मखमली घास उपवन की
पग छूने को ललचाई,
नूपुर की रुनझुन कहती
बजने भी दो शहनाई।

शत् शत् कमलों का वैभव
लुंठित 'कमला' चरणों पर,
कल्याणी विश्व विमोहिनी
साकार सुभग देती वर।

सपनों का जाल बुना था
धुँधली सी थी एक रेखा,
मतवाली भूल चली थी
जागरण क्रान्ति की लेखा।

हँसती थी मुस्काती थी
सकुचाती सरल सजीली,
अँखियाँ भरलीं अंजुरी में
देखे ना सखी छबीली।

मधुऋतु के साज सजाती
फिर एक पंचमी आई,
सोलह सिंगार सजाने
सन् 'सोलह' की तिथि आई।

रतिनाथ स्वयं हरषाया
किसलय किसलय में लाली,
कमनीय कान्त कोमल रव
बिखराता भर भर प्याली।

मन माणिक ने पाया था
अपना प्रिय आज जवाहर,
सिन्दूरी माँग विहँसती
पाँवों में रचा महावर।

श्वेतांचल अरुणांचल में
भर भर मोती इठलाता;
पावन कौमार्य सजीला
सौभाग्य स्वरों में गाता।

" तुम रानी हो राजा की
'स्व' यहाँ स्वतन्त्र बना कब,
आँसू पीकर मुस्काओ
साधना बना जीवन अब।"

'आनन्द भवन' मुस्काया
नन्दनकानन के जैसा,
डाली डाली हरषाई
था फूलों में रंग ऐसा।

बेटे ने सेहरा बाँधा
अरमान सजे 'मोती' के,
सपने साकार बने थे
धरनी 'मरूपरानी' के।

साड़ियाँ अशर्फी माला
चूड़ी बाँटी जाती थीं,
सब दास दासियाँ प्रमुदित
सखियाँ गाने गातीं थीं।

लहरों में कल कल करता
गंगा जमना का पानी,
ओ मेरे लाल अमर हो
मुस्काये सदा जवानी।

अक्षत रोली का टीका
पगड़ी में लाल लगे थे,
स्वर्णिम पट पीत वसन से
दूल्हे के अंग सजे थे।

सुन्दरता जिन पर मोहित
वर बने जवाहर ऐसे,
मादकता भी सकुचायी
विभु गौर अरुण आनन से।

शहनाई वादन बाजे
बजते 'आनन्द भवन' में,
'कमला' आनन्दी आई
कलियों से भरे सदन में।

आशा के दीप जलाती
बहनों की भाभी आई,
घर भर में शोर मचा था
'कमला' सी दुल्हन आई।

केसरी दूधिया चावल
भरतीं वधु के आनन में,
बहनें हँसतीं गातीं थीं
चंचलता चारु नयन में।

दूल्हा दुल्हन की शोभा
पुरवासी निरख रहे थे,
अँखियों में प्यास सजीली
पानी से नयन भरे थे।

न्यौछावर में माता के
शत शत आशीशें मंडित,
कमला ने वरद सुहागी
पाया अविराम अखंडित।

अनजाने स्नेह पगे थे
श्वसुरालय के सब वासी,
दृष्टि उठने से पहले
आ जातीं थीं सब दासी।

दिन ढला मुदित मुस्काते
सन्ध्या सिन्दूरी आई,
रजनी के स्वत्न रूपहले
आँचल में भर इठलाई।

मानो थी आज दीवाली
दीपक जगमग करते थे,
विद्युत प्रकाश फैलाकर
रंगीन छटा भरते थे।

टिमटिम की आँख मिचौनी
पुलकाती थी मन सबका,
आने वाला है कोई
लेकर सुहाग तन मन का।

सज्जित सँवरे कमरे में
'कमला' को सखियाँ लाईं,
'मधुरात' तुम्हें शुभ रानी
रुत पिया मिलन की आई।

पग सकुच सकुच रह जाते
दिल धक धक धक करता था,
भय लज्जा पुलक सिहरते
अन्तर पट भीग चला था।

जो अब तक थी अनजानी
अनुभूति मौन अनुपम थी,
सौरभ मचला लुटने को
आकुलता संवेदन थी।

फूलों की सेज सजीली
कह रही निकट वधु आओ,
इन प्यासी पांखुरियों की
मृदु चंचल प्यास बुझाओ।

अगरु लहरों का धूँआ
गृह का सुवास बनता था,
करनी है अभी प्रतीक्षा
जलता दीपक कहता था।

आहट समीर की होती
वधु चौंक चौंक सिहराती,
दर्शन-अभिलाषी आँखें
द्वारे तक अपलक जातीं।

आधी रजनी बीती है
घड़ियाल टनटना बोला,
कमला सिमटी सकुचायी
यह किसने घूँघट खोला।

सपनों के देव खड़े थे
नववधु नत थी चरणों में,
मधु कम्पित प्यार सजीला
पुलकित पुष्पित अपने में।

प्रिय का आलिंगन करती
फूलों की सुरभित माला,
मनुहारें गुन गुन करतीं
छाया चहुँ ओर उजाला।

पावन सुन्दर 'कमला' की
प्रिय शोभा निरख रहे थे,
अन्तर की प्यास नयन में
अपलक छवि भर सिहरे थे।

आलिंगन का क्षण आया
चुम्बित था भाल अधर भी,
कंगना खन खन करता था
कहता था अनकहनी भी।

तत्काल तभी नियति ने
यह कैसा तीर चलाया,
रस में विष का स्वर भरने
संदेश स्वदेशी आया।

देखा समीत सकुचाते
अभिसार मुग्ध नयनों ने,
दंशिता सेज सुमनों को
आँसू उगले अगरु ने।

आकुल उर में प्रणयी के
लहरें कलकल करतीं थी,
वह देशप्रेमी है पहले
भावना सजग कहती थी।

प्रिय का आना सपना था
या सत्य रहा शिव सुन्दर,
दो पल का प्यार बना था
जीवन भर का चिर-सहचर।

'मधुरात' गई ऊषा ने
अपना आँचल फैलाया,
चातकी मौन अँसुआई
क्यों दूर मिलन का साया?

यह मिलन विरह का संगम
कैसा सुख रजनी लाई,
सपने सिसके अन्तर में
अँखियाँ डबडब भर आई।

तृतीय सर्ग

मिलन

मिलन

नियति का कैसा यह उपहास
मिलन से पूर्व विरह का गान,
एक उजला स्वर्णिम संगीत
मचलता अधरों में अनजान।

कहें क्या पगले प्यासे अधर
रहा घट रोता सागर पास,
अलस आलिंगन बोझिल नयन
धरोहर प्राणों में विश्वास।

अनोखी थी सुहाग की रैन
अछूते हैं शम्मा के फूल,
सँजो दूँ आँचल में मनुहार
बना दूँ या पराग को धूल।

पीत मुरझाया मुख मत देख
अबोले दर्पण मन के भीत,
गुलाबी रंग फूल में बाँध
ले गए जीवन के नवनीत।

झपकतीं उठतीं पलकें आज
बहुत कुछ कहने को बेचैन,
प्रतीक्षा ने प्रियतम पथ देख
जागकर काटी सारी रैन।

धन्य है मातृ भूमि का प्रेम
धन्य मेरे प्रियतम की आन,
दासता की जंजीरें तोड़
सफल हो जीवन का अभियान।

सोचती 'कमला' व्यथिता व्यग्र
यही है जीवन का सार्थक्य,
प्राप्य अप्राप्य बने दो फूल
तरंगें सागर का सौन्दर्य।

अखिल वैभव में भरा विषाद
बना 'आनन्द भवन' श्री हीन,
चाँदनी पृथक् चन्द्र से 'शून्य'
जगमगाहट सब हुई विलीन।

सास भी भर नयनों में नीर
चूमती थी नव-वधु का माथा,
लाड़ली बेटी मत खो धीर
अमर हो तेरा उसका साथ।

लौट आने दे मेरा लाल
जाओगे तुम दोनों कश्मीर,
वहाँ भूलेगा वह उन्माद
मिटेगी तेरे मन की पीर।

स्वर्ग के स्वप्न बने साकार
'श्रीनगर' आया अधिक समीप.

हिमानी धवल रजत शिखर
नदी आँचल में जलते दीप ।

मरमरी घास छू रही चरण
हरितिमा का अवगुँठन डाल ,
नवागत अतिथि पधारे आज
मुस्कुराती धरती की बाल ।

मंत्रमुग्धा कमला के नयन
देखते पीते थे सौन्दर्य ;
विश्व-कवि की रचना कश्मीर
प्रकृति का यह अद्‌भुत औदार्य ।

"यही है प्रिय ! पुरखों की भूमि
कह रहे मुदित जवाहरलाल ,
हमारे वंश अंश में रक्त
इसी घाटी का रहा उछाल ।"

शिकारा झेलम का जल चीर
बढ़ रहा 'डल' तरणी की ओर ,
स्नेह विनिमय में खोया जगत
युगल नयनों की रक्तिम कोर ।

सजा घर आँगन , तोरण द्वार
सभी कुछ था सुन्दर शालीन ,
कल्पना सत्य बनी साकार
लगा जीवन बन गया नवीन ।

फूल में सौरभ की मृदु गंध
पवन में पुलक रहा मधु भार ,
बढ़ रहा था भयंकर राकेश
सिहरती थी रजनी सुकुमार ।

चाँदनी छिटकी थी मद-भरी
राशि राशि बिखरा था प्यार ,
कामना की किरणों का ओज
विश्व लेता था झुक साभार ।

उधर 'कमला' का नव श्रृंगार
मिलन का सजा रहा था साज ,
सोचता देशप्रेमी भी मौन
चाँदनी विकसी घर में आज ।

नील घूँघट पट में से झाँक
चन्द्रिका खोज रही अवलम्ब ,
झलकता अरुण कपोलों बीच
नील कुँडल मणियों का बिम्ब ।

उमड़ विकराल काल से बाल
बँध गये जूड़े में चुपचाप ,
सिन्दूरी माँग विहँसती मौन
उर्मि अलकों की लेती माप ।

और उस जूड़े पर अम्लान
खिले जूही बेला के फूल ,
सुहागी बेदी में गंभीर
सकुचते मिलन विरह के कूल ।

नील नभ का अशेष विस्तार
गहन सागर की मंथर चाल,
सिमट आई नयनों के मध्य
सुलगती बुझती कोई ज्वाल।

स्निग्ध आनन था द्युति से पूर्ण
नयन में रतनारा उन्माद,
खँजनी आकुलता में घुला
निराशा का धुंधला अवसाद।

गुलाबी पांखुरियों से अधर
दबी सी सिहराई मुस्कान,
अबोले अनगाये कुछ गीत
टूट जाये ना मन की आन।

समर्पण की बेला में मौन
लाज से रक्तिम बने कपोल,
नारी उर में श्रद्धा विश्वास
बोलते मधुर प्यार के बोल।

बनी दो देह एक ही प्राण
मिलन का क्षण लाया उल्लास,
राधिका से मिलते घनश्याम
सकुचता कुंज गलिन का रास।

चेतना प्रणय मिले सशरीर
विश्व रानी का बढ़ता मान,

हृदय स्पन्दन बन गति हीन
ले रहा विश्वासों का दान।

नगर 'श्री' सुषमा का अधिकोश
रम्य दृश्यों का मृदु भंडार,
विहँसते निर्झर, पर्वत, शिला
हिमानी शिखरों का आभार।

बादलों के उर में आकाश
और नभ में मेघों की बेल,
शिखा बढ़ती छूने विस्तार
प्रकृति का कैसा अद्भुत खेल।

झर रहे थे झरने चहुँ ओर
देखकर तृप्त हो रहे नैन,
अमर जहाँगीर-नूर का प्यार
'शालमारी' बगिया के बैन।

मधुर उपवन 'निशात' में विचर
फूल की सात सीढ़ियाँ देख,
युगल मन में नवीन उत्साह
हृदय में खिंची सुहानी रेख।

मुदित मन देखा "पहला गाँव"
रजत शिखरों का श्वेतागार,
प्रकृति ने बिखराये नव-पुष्प
बन गये पथिकों के उर हार।

रम्य शोभित गुल से 'गुलमर्ग'
मेघ आच्छादित उन्नत भाल,
बरसते नभ से हिम के फूल
धरणि पर श्वेत बिछावन डाल।

हिमानी आँचल में कुछ ठहर
पकड़ती 'कमला' प्रिय का हाथ,
स्नान छवि सागर में कर सँवर
खिलखिलाते थे दोनों साथ।

और देखे कितने ही 'मर्ग'
'नाग बैरी' झेलम का स्रोत,
थके सुषमा से सरसिज नैन
जगी अन्तर में स्नेहिल जोत।

विचरते युगल देखते दृश्य
सुहानी शीत मन्द मृदु वात,
महीने दिन कितने व्यतीत
लगा बीती हो बस एक रात।

जवाहर का मन पुलकित व्यग्र
शुभ्र हिम सा सजीव अभियान,
हृदय में ममता का मधु स्रोत
सजग सुन्दरता का वरदान।

पिता का पाकर यह संदेश
पहुँचना है प्रयाग तत्काल,
स्वप्न में बाँधा मधुर अतीत
नयन में स्मृतियों का जाल।

आज भी 'डल' का 'नेहरूपार्क'
मिलन स्थल सौन्दर्य अगाध,
धन्य युग पुरुष तुम्हारा प्रणाम
अमर 'कमला' की पावन साध।

चतुर्थ सर्ग

परिवर्तन

परिवर्तन

'कमला' में परिवर्तन आया
वर्ण गुलाबी पीत बना,
मंगलघट भर गये भवन में
महक उठा सुन्दर सपना।

निर्मल उज्जवल हुई दिशायें
वायु लगी अविकल बहने,
नयनों में आलस्य छा गया
भार लगे कितने गहने।

स्वर्ण क्रान्ति सी दीप्त हो उठी
भावी जननी की गरिमा,
सुन्दरता ही सृजन बन गई
शीश झुका देती उपमा।

मास नवम्बर सन् सत्रह ने
वर दी कमला की पीड़ा,
चन्द्रकला सी कन्या में थी
मौन सजग स्वप्निल क्रीड़ा।

'इन्दिरा' नाम दिया पुत्री को
माता पिता जब दोनों ने,
भारत की भावी आशायें
विहँस उठीं मुस्कानों में।

नारी का मातृत्व भर उठा
आँगन में सजता पलना,
चुम्बन में शत् शत् आशीषें
भूल गई सब कुछ अपना।

सास ससुर की सेवा में रत
वधु 'आनन्द भवन' की थी,
गृहिणी, पत्नी, मातृ रूप में
कर्तव्यों की परिधि थी।

पति को देशकार्य की धुन थी
पत्नी बाधा क्यों बनती?
तपस्विनी पूजा के फूलों
से प्रिय की डलिया भरती।

पल दो पल साथ बनाता
मौन साधिका को रानी,
पलकों में मोती छिप जाते
लहराती चूनर धानी।

पथ दर्शक भाषण देकर प्रिय
जनता के सिरमोर बने,
स्वयं-सेविका, देश प्रेमिका
के आँसू भी आग बने।

इधर देश में भी परिवर्तन
की लहरों ने जन्म लिया,
गाँधीजी ने सत्याग्रह का
जनता को गुरुमत्र दिया।

महायुद्ध का अन्त हुआ जब
भारत में उत्साह बढ़ा,
जनता में स्वराज्य की बातें
और स्वराज्य का चाव चढ़ा।

पूँजीवाद की जय जयकारें
पर किसान था सुखी कहाँ,
धन वैभव ने निधियाँ खोलीं
मुट्ठी भर ही व्यक्ति जहाँ।

असन्तोष फैला जन जन में
'रौलट बिल' जब पास हुए,
गाँधीजी बीमारी से उठ
वाइसराय के पास गए।

किन्तु अपीलें व्यर्थ गईं सब
सत्ता का मद छाया था,
भारत व्यापी आन्दोलन का
जोर शोर बढ़ आया था।

वीर जवाहर के शोणित में
देशभक्ति का उमड़ा ज्वार,
"सत्याग्रह से सत्ता बदलो
स्वतन्त्रता मानव अधिकार।"

हड़तालें की गईं काम
जनता के बन्द हुए सारे,
जलियाँवाला बाग कराहा
कितने लाल गये मारे।

"हिंसा कान्डों" के विरुद्ध
'सत्याग्रह' दिवस मनायेंगे,
हम भारत के वीर सभी
अपना झंडा लहरायेंगे।"

यह विचार थे जोर पकड़ते
जन मानस में भारत के,
बच्चा बच्चा थूक रहा था
मुँह पर पापी 'डायर' के।

गाँधीजी के असहयोग में
मूल अहिंसा का ही था,
तिलक, गोखले और चितरंजन
सबका लक्ष्य एक ही था।

भारत के शोषित किसान ने
आन्दोलन का वरण किया,
युवक जवाहर के कार्यों ने
पथदर्शक बन साथ दिया।

माता पत्नी की अस्वस्थता
और मसूरी जाना भी,
अखर रहा था देशप्रेमी को
जमींदारों का शोषण भी।

'असहयोग' की इस नीति से
'रीडिंग' हो बैठा हैरान,
नैतिक बल ने भारतीयों के
अंग्रेजों के मारे मान।

आये जब युवराज, मिलीं
उनको सूनी सड़कें, गलियाँ,
कांग्रेस का रूप खिला
नेताओं के मन की कलियाँ।

साम्राज्यवाद की नींव हिली
फुँकारा व्याल व्याधियों में,
कितने ही घर उजड़ गये,
नवयुवक गये बन्दीगृह में।

एक दिन वह क्षण भी आ पहुँचा
जिसका सबको ही भय था,
जनता की आँखों का तारा
वीर जवाहर बन्दी था।

कारागृह उन्मान्द बढ़ा नित
जीवन रहा उपेक्षित सा,
घर आँगन की भूल गई सुध
यौवन मौन सिसकता सा।

पंचम सर्ग

विरह

विरह

चले प्रिय कारागृह की ओर
देखती कमला पथ की धूल ,
गये वह जननी कार्य के अर्थ
रोकना भी था अपनी भूल ।

आज सन्ध्या थी मलिन उदास
इन्द्रधनुषी आँचल था शून्य ,
चाँद तारे कितने श्री हीन
चाँदनी में छलकाते दैन्य ।

कमलिनी नयनों से चुपचाप
बरस उठती आँसू की धार ,
पिघलता तिल तिलकर अनुताप
वेदना का अशेष विस्तार ।

शून्यता शय्या एकाकार
प्रतीक्षा की छलना भी नहीं ,
वंचना का वैभव साकार
मिलेगा जगती में क्या कहीं ?

शरद का उज्जवल शीतल अंक
अवनि अम्बर का स्वच्छ विलास ,
सुमन में मुस्काता अभिराम
ज्योत्मना का मृदु चंचल हास ।

रात्रि का नित बढ़ता साम्राज्य
विरहणी को देता झकझोर,
काँप उठता मन हो अति व्यग्र
सजग रजनी लाये कब भोर।

नखत नीलाम्बर के गिन मौन
बँधाया मन को कितना धीर,
चाँदनी में बरसे अंगार
आँसुओं ने छलकायी पीर।

धवल पट शम्मा हो का आज
बन गया हिम का कारागार,
स्वप्न में आलिंगन के बिम्ब
भ्रमित कर देते कितनी बार।

हिमानी ऋतु आई हेमन्त
जम गई रजनी अचल सभीत,
सिमटता दिवस भानु विस्तार
मानिनी को निधि बना अतीत।

तूलिका में भरकर कुछ रंग
बनाया था उस दिन एक चित्र;
कमलिनी नालशेष हिमभार
पंथ प्रियतम का अडिग विचित्र।

प्रतीक्षारत नयनों की खोज
अधखुले थे कक्षों के द्वार,
ठिठुरती थी कोई मदभरी
अंग अपने ही मानों भार।

कल्पना निद्रा में भी सजग
मान मनुहारों की सौगात,
उड़ गये थे विहगों से प्रहर
अरुण आँचल से झाँका प्रात।

आज कमला के आतुर नयन
उन्हीं चित्रों छवियाँ बाँध,
अधूरे बिखरे छिटके रंग
सिसकती अन्तर में मधु साध।

शिशिर का कम्पन पतझड़ विरस
हरितिमा बनी पीत साकार,
उपवनों में झंझा का विभव
प्रकृति परिवर्तन का आगार।

किसलयों में अपना ही पीत
वर्ण सजला ने देखा मौन,
मर्म आहत से गूँजे बोल
कोकिला की 'कुह कुह' में कौन।

दृष्टि में कौंधे पीले वस्त्र,
स्मृति मृदु गई खींच एक रेख.
लगाया प्रिय ने पीला फूल
नयन मूँदे थी वह अनदेख।

केतकी सा कोमल कृश गात
बना था उस दिन एक वरदान।
उदर में विहँसा पहला फूल
मृदुल मुस्कानें थीं अनजान।

गुलाबी, पीले, नीले, लाल
सुमय ले आया मधुर बसन्त ,
नवल सुषमा का करने वरण
स्वर्ग से आया कोई कन्त ।

किन्तु विरहिन को आभा रहित
पुष्प मधुऋतु के लगते आज ,
जल रहे टेसू और पलाश
हरित उपवन में मीले साज ।

अकेला आया क्यों मधुमास
भरी थी एक दिन जिसने माँग ,
पंचमी का सौरभ भी क्लान्त
सुमन में रोया मौन पराग ।

होलिका का उत्सव मदभरा
जगाने आया मधुर अतीत ,
भीगते थे तन मन प्रिय संग
रिझाता मन अपना मनमीत ।

भिगोकर चोली - चूनर चारू
'इन्दिरा' डाल रही कुछ रंग ,
साँस में उच्छवासों का ताप
लिये क्यों लौटा नहीं अनंग ?

बसन्ती सौरभ पर छा गया
ग्रीष्म का ऊष्मानिल चुपचाप ,
प्रखर रवि किरणें बढ़ीं सतेज
धरणी नभ में भर भर संताप ।

विरह दिनकर से लेता होड़
तप रहे अपने ही सब अंग,
जलन बन जाये मीठी पीर
मिलेगा कब ऐसा सत्संग।

स्वेद श्रमबिन्दु लिये कृश गात
खो रहा सुधि अपनी नादान,
चन्द्रमुख दर्शन की अभिलाष
जल रहे बाती से ही प्रान।

भाल पर चन्दन का मृदु लेप
दासियाँ करतीं नित उपचार,
केवड़ा और गुलाब के पेय
दिये जाते कितनी ही बार।

किन्तु जलता था प्रतिपल हृदय
अनकही थी अधरों में बात,
मानिनी के मन का अनुताप
ले गई उष्ण झुलसती रात।

मेघ से झर झर झरता नीर
सावनी ऋतु का अभिनव हार,
नाचते बेसुध मन मयूर
तृषित धरती के बुझे अगार।

गूँजते 'पी' 'पी' के स्वर विकल
वेदना चातक की अनमोल,
रुदन में भरे हुए मधु गीत
मिलन स्मृतियों के पट खोल।

उधर 'कमला' भर नयना अश्रु
बुझाती अपने मन की प्यास,
दिवस रजनी सन्ध्या अतृप्त
कसकती आज फाँस सी आस।

एक दिन मोती से मुंह भरे
भीगकर लहराते थे बाल,
अधर गीले, सहराई पुलक
नयन में मानिक मदिरा ढाल।

आज अधरों में चातक बसा
नयन में उमड़ घुमड़ घनघोर,
विरहणी के आकुल उच्छ्वास
छा गये शून्य क्षितिज सब ओर।

उपवनों में झूले की पेंग
बढ़ाती, गाती कितनी बाल,
मिलन यौवन विरह के गीत
हृदय में रहे तीर से साल।

सोचती बीता पूरा वर्ष
विरह बढ़ता जाता अविराम,
मेघ भी पूछ रहा ज्यों मौन
"कहाँ राधे तेरे घनश्याम ?"

"लौट जा रे ओ काले मेघ
नहीं दूँगी कोई सन्देश,
कर्म ही है बस मेरा धर्म
कर्म ही है मेरा आदेश।"

घर को वधु ने सिमट सकुचकर
सास ससुर से आज्ञा पाई,
देशप्रेमिका वीर नारी ने
स्वतन्त्रता की ज्योति जगाई।

'कमला' ने दुर्गा बन, शोषित
नारी वर्ग को जा ललकारा,
घर घर में एक अलख जगाई
गूँजा 'जय स्वराज्य' का नारा।

रेशम की साड़ी जलती थी
चरखा खादी पूजे जाते,
कंगन हार, अँगूठी झुमके
राष्ट्रकोश की शान बढ़ाते।

चूड़ीवाले हाथ सजाते
दुर्गा लक्ष्मी की तलवारें,
मेंहदी माँग महावर सबमें
स्वतन्त्रता के स्वर झंकारे।

ऊँच नीच का भाव मिटाया
नारी बस केवल नारी थी,
छूटे महल, झोंपड़े छूटे
अभियानों की तैयारी थी।

लाखों बहनें सम्मुख आती
'कमला' जब भाषण देती थी,
जमा रक्त था जो सदियों से
उसमें तरुणाई भरती थी।

भुला दिये घर द्वार, दुध मुँहे
बच्चे प्रेमी माताओं ने,
भारत की स्वतन्त्रता लेंगे
आग भरी थी इन नारों में।

कल तक थीं जो बन्द गृहों में
आज जुलूसों में जातीं थीं,
भय लगता था जिन्हें पुरुष से
आज उन्हीं से टकरातीं थीं।

बलि वेदी का यज्ञ रचा था
आई जब नारी की बारी,
कल्याणी ने आगे बढ़कर
स्वेच्छा से आहूति डारी।

चलीं लाठियाँ और गोली भी
किन्तु न कोई हाथ हिला था,
नारी सभायें थीं ज्यों की त्यों
क्या कोई भी शीश झुका था ?

" बलिवेदी पर रक्त चढ़ेगा
मातृभूमि के बन्ध कटेंगे,
स्वतन्त्रता के सभी पुजारी
साँस इसी सरगम में लेंगें। "

अंग्रेजी अफसर थर्राये
नारी वृन्द का चढ़ा तिरंगा,
अधरों पर 'स्वराज्य' के नारे
वाणी में लहराती गंगा।

गर्वित थी प्रयाग की गलियाँ
अपनी सुकुमारी कमला पर,
न्यौछावर होते नर नारी
वीर जवाहर की प्यारी पर।

जोड़ी की तस्वीरें शोभित
घर आँगन और सभागृहों में,
जनता अपना मार्ग खोजती
दोनों ही के आदर्शों में।

विरह स्वयं वरदान बन गया
कार्यशील नारी के पथ में,
आग आँसुओं ने बरसाई
अत्याचारी के आँगन में।

★★★

षष्ठ सर्ग

संग्राम

संग्राम

देह थी कारागृह में बन्द
बनाता मन अतीत के चित्र,
सोचते रहे जवाहर लाल
नियति का कैसा चक्र विचित्र।

उलझनों, झंझाओं के मध्य
सान्त्वना बनें प्रिया के बोल,
स्वास्थ्य में जर्जरता साकार
वाणि की निधियाँ थी अनमोल।

"भारती माँ के बन्धन खोल
यही है जीवन का संग्राम,
शस्त्र से टकरायेगा तेज
शौर्य कब लेता है विश्राम।"

यही था 'कमला' का गुरुमंत्र
चेतना का उज्जवल वरदान,
सजग हो उठा देश का लाल
प्रेरणा का सहर्ष पा दान।

युगल जीवन का नवम् बसन्त
कमलिनी 'कमला' थी अस्वस्थ,
ले गये उसको स्विट्ज़रलैंड
हो गए तन मन दोनों स्वस्थ।

क्रान्तियाँ जगी विश्व में अडिग
मनाई लन्दन ने हड़ताल,
कौंधते जनमानस में प्रश्न
देखकर शासकवर्गी चाल।

उठाया भारत ने निज भाल
जर्मनी में दलितों के साथ,
राष्ट्र में भरा नवल उत्साह
करुण मानवता हुई सनाथ।

शक्ति मन की है अजय अजेय
सफल था कमला का उपचार,
बिताकर यूरोप में दो वर्ष
दम्पति लौटे अपने द्वार।

रिपब्लिक कान्फ्रेंस ने चुना
सभापति सेवक को तत्काल,
यूनियन का अविजित आवेश
युवक दल पहन रहा जयमाल।

स्वातन्त्रता का अविचल संग्राम
हुआ जब अठ्ठाइस से युक्त,
"साइमन लौटो वापिस जाओ"
कह उठी जनता बन्धन मुक्त।

प्रतिज्ञा ज्यों ज्यों आगे बढ़ी
कार्य का छाया मुग्ध विलास,
तीस की जनवरी छब्बीस अमर
दिवस गणतंत्र आ गया पास।

नमक कानून गाँधी ने तोड़
"भँग सविनय" का गाया छन्द,
जवाहर को कारागृह वास
शासकों के मन में आनन्द।

भला प्रतिबन्धों से भी कहीं
हुआ अवरुद्ध विश्व संग्राम,
यही हैं इतिहासों के लेख
और महायुद्धों का परिणाम।

पुरुष नेता नैनी में बन्द
नारियों ने छेड़ा संग्राम,
बन गया 'धरना' उनका अस्त्र
लड़ाई बढ़ती थी अविराम।

जुट पड़ी 'कमला' सहज सहर्ष
'भँग' आन्दोलन की वह जान,
'जवाहर' से बढ़कर उत्साह
निभायी नेहरू कुल की आन।

मिला सप्ताह मात्र का समय
निहारा प्रियतम का प्रिय भाल,
युगल जोड़ी का वाहन रोक
ले गये प्रियतम को फिर व्याल।

देश में कोलाहल मच गया
पड़ गई आन्दोलन में जान,
नैनी की दीवारों में बन्द
व्यग्र थे देशप्रेमी के प्रान।

सिंहनी ने कब मानी हार
काल सी टूट पड़ी चहुँ ओर,
जनवरी एक साल 'बत्तीस'
हाथ में बन्दी गृह की डोर।

दृगों में था अपूर्व उल्लास
प्रकाशित मुख पर होता तेज,
देखते रहे ठगे से मौन
पुलिस अधिकारी हो निस्तेज।

पुरुष की अनुगामिनी ही नहीं
प्रेरणा शाश्वत नारी रहीं,
सहे उत्पीड़न, अत्याचार
रक्त के आँसू पीती रही।

वधू कमला का सुन प्रस्थान
हो गये चिन्तित मोतीलाल,
लाड़ली सुकुमारी भी गई
गया था पहले जिस पथ लाल।

युगल कारागृह अवधि पूर्ण
पिता ने खींची अन्तिम साँस,
फरवरी 'षष्ठ' उन्हें ले गई
'लाल' 'रानी' दोनों थे पास।

तिरंगे में शोभित शव अचल
ले रहा जीवन अमल विराग,
सराहना कार्यों की चहुँ ओर
भीड़ में उमड़ा अखिल प्रयाग।

सन्देशों से सारा घर भरा
सभी थे दुख में अपने साथ,
जवाहर चिन्तित, मौन उदास
पिता का छूटा साया, हाथ।
बनाई भ्रमण योजना एक
चिकित्सक की सलाह को मान,
नयन में रेखा खींचती रही
द्वीप लंका की सुघड़ उठान।

पत्नी कन्या दोनों के साथ
जवाहर चाहते थे विश्राम,
एक दो सप्ताहों के बाद
पूर्ण करने थे कितने काम।

हिन्दमहासागर का उर चीर
खिला था लंका का वनफूल,
प्रकृति सौन्दर्य सरल निर्बाध
शान्त रव से निर्मित दो फूल।

मिला आतिथ्यपूर्ण सत्कार
द्वीप के वासी सरल उदार,
दुग्ध फल फूल सब्जियाँ द्रव्य
सभी को मिलता था उपहार।

बुद्ध की शान्त सौम्य एक मूर्ति
बनी मानवता का वरदान,
विश्व में हों कितने संघर्ष
शान्त भिक्षुक रहते अनजान।

समय बढ़ता जाता गतिशील

गृहिणी 'कमला' का आँचल थाम ,

हृदय का उन्मादी संघर्ष

देखता था कितने छविधाम ।

पूर्ण दक्षिण घूमें भ्रमणार्थ

'इन्दिरा' के मुख पर मुस्कान ,

पिता माता दोनों के साथ

किशोरी चलती थी अम्लान ।

सप्तम सर्ग

भावना

भावना

क्या जीवन कर्त्तव्य मात्र है
और भावना बस उत्पीड़न ?
क्या है निहित नहीं दोनों में
सत्य, शिवं का सुन्दर दर्शन ?

वरद सन्तुलन है दोनों का
जगत विटप तो मनुज विहंगम,
वीर जवाहर के अन्तर में
दोनों सरिताओं का संगम।

कारागृह में रहे किन्तु क्षण
जीवन के अनमोल न खोये,
लिखा 'विश्व इतिहास' 'कहानी'
'इन्दिरा' को मृदु पत्र संजोये।

सरस बना इतिहास, एक कविता
ही तो है 'विश्व चिरंतन',
'कमलापति' के कोमल उर ने
दिया भाव को नव-स्पन्दन।

राजनीति का कुशल खिलाड़ी
हृदय लेखनी का भी धनी था,
सरस ज्ञान सिंचित था उर में
सजल भावनामय प्रेमी था।

वन्दीगृह की दीवारों में
मौन सजग स्मृतियाँ छातीं,
प्रश्न चिन्ह 'कमला' का जीवन
दिन दिन वह घुलती ही जाती।

दुर्बल था शरीर, आत्मा में
जलती थी एक ज्योति निरन्तर,
देशकार्य पति के वियोग ने
बना दिया पगली को जर्जर।

डगमगाई सरकार स्वयं
जैसे अपने दूषित कर्मों पर,
वन्दीगृह से आई अनुमति
देखे पति, पत्नी को जाकर।

घर आकर भी पुलक कहाँ थी
सब कुछ जैसे लुटा हुआ था,
'कमला' का सुन्दर शरीर
अस्थिपंजर कंकाल बना था।

मुख का मुग्धाभाव अछूता
नव-वधू सा अब भी अकलंकित,
कमल नयन में भरे प्रतीक्षा
प्रिय को निरख हो उठी पुलकित।

धीर जवाहर मौन सोचते
क्या कमला अब नहीं जियेगी ?
जीवन की स्वप्निल घड़ियों को
श्री विहीन कर दीन करेगी।

बीते बरस अठारह फिर भी
भरा कहाँ मन प्रिय बातों से,

नित्य नई मनुहारें पलतीं
रस भर भरकर अभिसारों से ।

"मैं उन्मत्त उपासक माँ का
क्या तुमको अभीष्ट दे पाया ?
किन्तु मानिनी मौन रहीं तुम
पीड़ा में शरीर सुलगाया ।

यह भी क्या कोई जीवन है
मैं बन्दी हूँ जंजीरों का,
मन कहता सब कर्म छोड़कर
सेवक बन जाऊँ कमला का ।

जग व्यापारी मुझसे असमय
आज माँगता यह आश्वासन,
दूर रहूँ मैं राजनीति से
यदि चाहूँ 'कमला' का जीवन ।"

समझ गईं वह सरला आँखें
प्रिय मन में जो द्वन्द्व उठा था,
साहस था उन मुस्कानों में
नयनों में एक दीप जला था ।

"यह आश्वासन का क्रय विक्रय
क्या हम देशप्रेमी कायर हैं ?
न्योछावर शत् शत् कमलायें
मातृभूमि का कार्य अमर है ।"

चले जवाहर भर नयनों में
नीर दिया माथे पर चुम्बन,
अमर सदा मानव जीवन में
मिलन विरह का रोमांचित क्षण ।

स्वास्थ्य लाभ करने कमला को
दिया भुवाली भेज सभी ने,
कैसा था जीवन क्रम उनका
किया अलग फिर कारागृह ने।

यह भी एक अनुग्रह ही था
कभी कभी सरकार मिलाती,
विरह व्यथित व्याकुल घड़ियों में
एक नई रंगीनी आती।

"घोर निराशा और वियोग ही
सारे पुरस्कार देते हैं,
क्या यह कथन सत्य जीवन में
रीता कर हम घट भरते हैं?

खोज रहा था इन प्रश्नों में
शान्त 'जवाहर' स्वयं भावना,
रजनी के नीरव प्रहरों में
आकुलता ही बनी कामना।

यौवन के अरमान जले, हाथों
में उनकी राख भरी थी,
स्मृतियों के चित्र बने, नयनों
में उनकी ललक छिपी थी।

'कमला' 'यूरोप' चली गई तो
मिलने का क्रम बनकर टूटा,
बाहर का आकाश अजाना
धरती का प्रिय आँचल छूटा।

पूरी हुई बन्दिनी घड़ियाँ
प्रिय दर्शन की चाह प्रबल थी,

प्रश्न कौंध जाते अन्तर में
रुग्ण दशा क्या कुछ सँभली थी ?

माह दिसम्बर था पैंतिस का
धवल हिमानी हिम बिखरी थी ,
दिन दिन ढलती देह कमल की
साँसें धागे में लटकीं थीं ।

यह संग्राम मृत्यु जीवन का
अन्तिम क्षण तक रहा निरन्तर ,
'कमला' में अपूर्व साहस था
भरा हुआ दुख सुख से अन्तर ।

उसकी इच्छा जान जवाहर
स्विट्‌जरलैंड तभी ले आये ,
किन्तु सभापति काँग्रेस का
सीमा में कैसे बँध जाये ?

कमला बाधा क्योंकर बनती
उसने कहा स्वयं जाने को ,
चिन्तित बना चिकित्सक, बोला—
दिवस आठ दस रुक जाने को ।

रोगिणी दिन में स्वप्न देखती
कहती..."कोई बुला रहा है ,
मत रोको मुझको जाने दो
काम बहुत सा पड़ा हुआ है ।"

छत्तिस की फरवरी अठाइस
ऊषा मृत्यु कलष ले आई ,
जीवन रस से भरली गागर
रिक्त हुई अखियाँ अँसुआई ।

'कमला' का सुन्दर शरीर, जीवन
विहीन बन राख हुआ था,
प्यारा भोला मुखड़ा, लपटों
में भी आमंत्रण देता था।

रीता घट ले बढ़े जवाहर
शेष अस्थियाँ ही मिल पाईं,
हाथ भर रहे, नयन झर रहे
क्षितिज पार, दुल्हन मुसकाई।

"स्वर्गादपि गरीयसी भूमि
देव सृष्टि सी अचला, अमला,
तेरे गौरव पद तल पर माँ
न्यौछावर भारत की 'कमला'।

प्राप्ति बने साधना देश की
अमर प्यार सौरभ बिखराये,
नित जल जलकर जिसे जलाया
'ज्योति' जवाहर की मुस्काये।"

मानों इन अस्फुट शब्दों में
'कमला' की गरिमा गूँजी थी,
त्याग, साधना, मौन समर्पण
विश्वासों की चिर प्रतिध्वनि थी।

भाग्य विधाता रहा अबोला
वातावरण बन गया बोझिल,
क्लान्त 'जवाहर' बने वियोगी
अँसुआई आँखें थीं तन्द्रिल।

★★★

अष्टम सर्ग

प्रेरणा

प्रेरणा

शिथिल पड़ा 'आनन्द भवन' स्वागत
सत्कार नहीं बन पाये,
दीप बुझे, दीवारें रोईं
'कमला' रहित जवाहर आये।

शयनकक्ष था शान्त, धवल पट
शम्मा का निष्प्राण पड़ा था,
मुरझाई कलियों फूलों में
जीवन का इतिहास छिपा था।

"कमला! कमला, कहाँ गई तुम
मुस्काकर सत्कार न दोगी?
श्रान्त पथिक के लिए स्नेह का
क्या कोई प्रतिदान न दोगी?"

दीवारों से टकराकर जब
प्रश्न स्वयं रोता ही आया,
सादर जल ले आई दासी
मुख उदास उसका अँसुआया।

कमला का अस्तित्व निरर्थक
अपनी भूल लगी अनजानी,
साधारण हो या विशेष, सुध
बुध खोता एकाकी प्राणी।

लाल, गुलाबी, नील, बैंजनी
आवरणों में सुधि भरभाई,
नीरव प्रहरों में क्यों लगता
सुमुखि पहन इन्हें मुस्काई।

यह कैसा है खेल नियति का
वह थी जब अवकाश नहीं था,
उसकी आकुल मौन साधना
का कोई आभास नहीं था।

किन्तु आज लगता निरीह सा
ज्योतिहीन होकर जीता हूँ,
जीवन की घड़ियों का अनमिल
बोझिल भार अवश ढोता हूँ।

देशकार्य भी बन विरक्ति सा
मन को उबा उबा देता है,
व्यर्थ सभापति पद का आसन
आज नहीं शोभा देता है।

रोता है मधुमाँस, माधवी
उपवन में विहँसी मुरझाकर,
आम्र मंजरी रसविहीन सी
भर बैठी 'कुहु कुहु' अकुलाकर।

पटरस व्यन्जन सजे सजाये
निर्विकार अनछुए रहे सब,
मानों भूख प्यास रूठी सी
जीवन ही गतिहीन बना जब।

आई फिर सिन्दूरी सन्ध्या
रक्तांचल नभ में लहराया,
घनमाला में सजग उनींदी
चिर परिचित प्रेयसि की छाया।

रजनी बढ़ी सितारे ओढ़े
आँचल छूट छूट रह जाता,
रजनी शशि को, शशि रजनी को
निरख रहे जग शोभा पाता।

व्यथित जवाहर नयन मूँदकर
एकाकी लेटे शय्या पर,
सुभग सुहागी दुल्हन का साया
सजीव हो उठा निरन्तर।

निद्रालस नयनों में किसने
जाल बुन दिया फिर सपनों का,
श्वेत सितारी आँचल ओढ़े
शशिमुख मुस्काया 'कमला' का।

वह भोले खंजनी नयन, दुःख
सुख से दूर सरल मुस्काये,
बोले हम तुम विलग कहाँ हैं
गागर में सागर भर लाये।

रक्तिम बनें कपोल, अधर
अनुराग राग से था सब रंजित,
बेंदी, माँग, महावर, मेंहदी
सबमें चाह हो रही व्यंजित।

भुवन विमोहन रूप सजीला
तन मन की सब सुधि बिसराई,
जगी कामना आलिंगनमय
ज्योतिपुंज बाहें भर लाई।

किन्तु छिटक आलिंगन से वह
ज्योतिपुंज मानों कहता था,
"मैं छलना हूँ, कर्मशील तुम
सुन्दर सपना ही महका था।"

"अपराधी है दास तुम्हारा
साथ इसे भी सुमुखि ले लो,
विलग मत करो, हे जीवनधन
जीवन मृत्यु सभी तुम ले लो।"

वैरागी से बने 'जवाहर'
कहते थे मानों सपने में,
आँख मिचौनी खोना पाना
सत्य यही क्या बस जीवन में।

घनदामिनी सी चमक उठी, चहुँ
ओर छा गया एक उजाला,
जीवन का संदेश दे रही
शान्त सौम्य सपनों की बाला।

'ज्योतिपुंज' आकार बन गया
टिमटिम लौ विराट बन आई,
बनी प्रेरणा स्वयं तपस्विनी
वरदानों ने ज्योति जगाई।

"प्रकृति है नहीं पुरुष से विलग
युगों से चलता आया खेल,
पास और दूर बनें क्यों प्रश्न
अमर संसृति की पावन बेल।
यही है जीवन का चिर सत्य
यही है जीवन का पाथेय,
प्यास भरकर जो देता नीर
विश्व बन जाता उसका गेह।
पूर्ण कर मेरे मन की साध
राजयोगी मत बन अनुरक्त,
भावना व्यक्ति हृदय में पाल
कर्मरत रहकर बनो विरक्त।
तुम्हीं से सीखेगा संसार
कर्म, जन जीवन का कल्याण,
शूल भी बन जायेंगें फूल
शौर्य जब बढ़े तिरंगा तान।
प्यार में क्यों शरीर का मोह
आत्मा अजर अमर है प्राण,
समय कितना हो निर्मम क्रूर
ज्योति कब होती है निष्प्राण।"
स्वप्न का झीना पट फट गया
प्रेरणा के सुन वचन सतेज,
नयन आकुल प्रेमी के खुले
वाणि थी मौन और निस्तेज।
एक झटका सा खाकर हाथ
जुड़ गये और झुक गया शीश,

बोध कर्त्तव्य कराने स्वयं
स्वप्न में आया कोई ईश।

नहीं थे यह अबला के बोल
नहीं आँसू का दैन्य विराम,
जगा था एक स्वर्णिम संगीत
चेतना का वैभव अभिराम।

तभी धुंधलायी नारी मूर्ति
जहाँ मन का अशेष विस्तार,
बन गये अधर अमिट संदेश
अर्चना का वृत्त चक्राकार।

"कमला! तुममें ही चिर नारी
आशा विश्वास लिये उर में,
पी गरल दिया सौन्दर्य मधुर
नव राग भरे जीवन स्वर में।

नयनों में नभ, अनगिन सावन
आँसू की धारा पुण्य सलिल,
जीवन जगती का सत्य शिवं
बन गया सुन्दरम् और स्वप्निल।

नत चरणों पर पुलकित वैभव
नर अहं, शक्ति का असुर राग,
अभिनव शक्ति हो चेतन की
विहँसा सौरभ, सरसा सुहाग।"

भावना, कर्म और कर्त्तव्य
समन्वय में सब कुछ संभाव्य,
काव्य जीवन बन जाता स्वयं
और जीवन बन जाता काव्य।

नवम सर्ग

कर्म

कर्म

स्वप्निल रजनी ने डाला
अरुणिम आँचल ऊषा का,
प्रेरणा कर्म बन आई
वरदान बनी जीवन का।

त्यागी के सन्मुख नत थी
सम्पूर्ण राष्ट्र की दृष्टि,
नेतृत्व झुका चरणों में
शत शत नयनों से वृष्टि।

निर्माण राजनीति का, था
सामाजिक समता में,
उत्साह चेतना जागे
शोषित पीड़ित जनता में।

मानवता के चिर प्रहरी
अष्टम सम्राट बने थे,
त्यागा था राजमुकुट भी
प्रेयसी के प्रिय रहे थे।

हिंसा, शोषण, उत्पीड़न
सेवा स्नेह बन जाते,
प्रतिहिंसा मंत्र न बनती
यदि वह शासक बन जाते।

साम्राज्यवाद की गति को
जनता चुनाव ने रोका,
काँग्रेस बढ़ चली आगे
नेतृत्व कुशल नेता का।

जब विश्वयुद्ध के बादल
संसार क्षितिज पर छाये,
भारत ब्रिटेन सहयोगी
संदेश राज्य के आये।

आश्वासन स्वतन्त्रता का
हर सैनिक के मन में था,
यूरोप के युद्धस्थल में
भारत का रक्त बहा था।

परिषद विधान की बनती
नेहरू के संरक्षण में,
'गोरों ! हम नहीं झुकेंगे'
भावना भरी जन जन में।

आन्दोलन आन्दोलित थे
बढ़ते थे भारतवासी,
जनता के केन्द्र जवाहर,
फिर कारागृह के वासी।

यह चार वर्ष की कारा
संकेत बनी प्रश्नों का,
भारत ही बन्दीगृह जब
क्या हर्ष छूट जाने का ?

आया फिर क्रान्त बयालिस
स्वर गुंजारे जनता ने,
सत्ता ब्रिटेन लौटा दे
चेतावनी दी नेता ने।

मानवता के वैरी ने
कब मूल्य लहू का आँका,
दुनियाँ में शान बढ़ाता
साम्राज्य ब्रिटिश का बाँका।

जब जनता, नेताओं की
आशायें रंग न लाईं,
'भारत छोड़ो' अंग्रेजों
चहुँ दिश ध्वनियाँ टकराईं।

"हँस हँसकर रक्त दिया है
लालों ने भारत माँ के,
मरने से कभी डरे हैं
दीवाने स्वतन्त्रता के।"

सदियों से जमे लहू में
चिनगारी सी धधकी थी,
नर-नारी, बच्चे बूढ़े
सबमें चाहें उमड़ीं थीं।

उद्घाटन से पहले ही
ठुकराया गया तिरंगा,
फिर बन्दी बने जवाहर
सत्याग्रह पावन गंगा।

मिलने जुलने वाणी पर
प्रतिबन्धों की छाया थी,
लाठी गोली बमवर्षा
जनता क्रोधित पागल थी।

पत्थर बरसे रेलों पर
लूटी जातीं दूकानें,
शिक्षालय बन्द पड़े सब
मरते जाने अनजाने।

विस्फोट हुआ ज्वाला का
जब कोटि कोटि साँसों में,
कल्पना रंग भर लाई
युग युग की आशाओं में।

अनशन उपवास सफल थे
नेहरू गाँधी के अपने,
'सत्याग्रह जगा रहा था
जनता के सोये सपने।

खादी अपनायी जाती
चरखा घर घर चलता था,
"अब राज्य स्वदेशी होगा"
हर व्यक्ति यही कहता था।

पत्रों के प्रतिबन्धों ने
नेहरूजी को चौंकाया,
भावना राष्ट्रीयता की
यह कौन कुचलने आया।

साम्राज्यवाद नीति का
होता विरोध प्रतिदिन था,
कितने प्रचार के साधन
अपनाता जन गण मन था।

आया जब वर्ष छियालिस
सरकार थकी घबराई,
भारत स्वतन्त्र करने की
योजना एक बनवाई।

अंकुर फूटा, पौधा बन
सरसा स्नेह 'मोती' का,
बनकर स्वराज फल आया
पल्लवित स्वप्न नेहरू का।

साधना सफल योगी की
करने सैंतालिस आया,
परतंत्र देश ने अपना
मुख सदियों बाद उठाया।

दशम सर्ग

प्राप्ति

काश ! आज कमला होती
जीवन हँसता हुलसाता,
बुझते दीपक जल जाते
मन पुलक पुलक सिहराता।
स्मृतियों से बोझिल पग
जब शयनकक्ष तक आये,
दो फूल चढ़े भीगे से
नत नयन चित्र भर लाये।

प्रेरणा 'कमल' कल्याणी
साकार वरद बन आई,
लो देश स्वतन्त्र तुम्हारा
झिलमिल दीपावलि छाई।
तेरा सुहाग जननी की
आँखों का उजियारा है,
जनता के संकल्पों का
चमकीला ध्रुव तारा है।
विधि की विडम्बना ही है
जगमग दीपक जलते हैं,
मानों विरही व्याकुल के
अरमान स्वयं जलते हैं।
भावों की स्वप्निल सरिता
कैसा सजीव सम्मोहन,
छलना सा घिर घिर आता
प्रेयसि सौन्दर्य विमोहन।

थी लाल लाल आँचल में
शोभित स्वनम्यना नारी,
सिन्दूरी भाल दमकता
सुषमा जाती बलिहारी।

कमनीय कान्त वधु रक्तिम
अधरों में गान भरे थे,
लहरीली कुंचित अलकें
हाथों में मंगल घट थे।

सुमुखी ग्रहिणी ग्रह-दीपक
अपने हाथों में लेकर,
भरती प्रकाश कण-कण में
कितनी निधियाँ बिखराकर।

'आनन्द भवन' की शोभा
यह भवन आज झरना सा,
मानस का स्मृति शतदल
मकरन्द बना झरता सा।

'कमला' की छाया भरकर
सपनों ने दीप जलाये,
ऊषांचल में विहगों ने
जागरण गीत मधु गाये।

पन्द्रह अगस्त सैंतालिस
स्वर्णिम प्रभात की घड़ियाँ,
मृदु स्वर से जोड़ रहीं थीं
दुख सुख की बिखरी कड़ियाँ।

गृह द्वार सभी शोभित थे
तोरण वन्दनवारों से,
करने प्रभात की फेरी
बच्चे निकले घर घर से।

दिल्ली ने ली अंगड़ाई
तमणाया लाल किला भी,
हर्षित भूमी मीनारे
ऊँचे ऊँचे गुम्बज भी।

कितने युग बीते, कितनी
सदियाँ सिसकी सिहराई,
सूनी गोदी माँगे भी
इस बेला में मुस्काई।

सरदार 'भगत' की जननी
कहती मौनाश्रु भरकर,
"तुम धन्य ! अमर सुत मेरे
बलिदान फला अवनि पर।"

रोते रोते भी हँसते
सुखदेव शहीदों के घर,
लहराया गया तिरंगा
कुछ फूल चढ़े प्रतिमा पर।

भारत के 'लाल' जवाहर
जब लाल किले पर आये,
जय जयकारें, करतल ध्वनि
कलियों के बादल छाये।

फिर आया इतिहासिक क्षण
लहराया गया तिरंगा,
जनता ने सुमन चढ़ाये
नयनों में यमुना गंगा।
भाषण सुनने नेहरू का
जनता अपार आई थीं,
शनभ घनमाला से झरती
नन्हीं बूंदे आई थी।
भाषण क्या था श्री मुख से
अमृत झरना झरता था,
कितनी योजना समेटे
नवयुग आगे बढ़ता था।
मंत्री प्रधान के कर से
जल ज्योति आज थी प्रमुदित,
युग युग के बलिदानों का
साकार रूप था मुकुलित।
बच्चे मिठाइयाँ लेकर
फूले फूले घर आये,
चित्रों ने नेताओं के
घर घर में साज बजाये।
उल्लास सरल जनता का
देखा जब विदेशियों ने,
कितनी आँखें भर आई
'तुम धन्य' कहा कितनों ने।

विद्युत शलभों ने जलकर
भवनों का रूप बढ़ाया,
सन्ध्या थी आज सुहागिन
सौरभ प्रकाश भर लाया।

उपवन झरनों में टिमटिम
रंगीन छटा बिखरी थी;
मानों स्वतन्त्रता झिलमिल
आँचल में सज सँवरी थी।

पर प्रकृति नटों ने अपना
यह कैसा नृत्य दिखाया,
भाई भाई में कटुता
वैमनस्य बीज फल लाया।

अंग्रेंजों की नीति थी
या कूटनीति जिन्ना की,
आँगन के बीच दिवारें
अकुलायी भारत माँ थी।

हिन्दुस्ताँ, पाकिस्ताँ के
दो देश बने नक्शे पर,
खंडित स्वतन्त्रता आँचल
बिखरे मोती धरणी पर।

दुःख सुख की आँख मिचौनी
खेली जाती अम्बर में,
दिनकर तेजस्वी ढलता
सन्ध्या के धूमिल पट में।

यह कैसी विषाक्तता थी
गाँधी की उदारता की,
हिन्दू मुस्लिम की खाई
घातक बनती प्राणों की।

लाहौर कराँची पिंडी
धू धू करके जलते थे,
रावी चुनाव के तट पर
शोणित झरने झरते थे।

हिन्दू की माता बहनें
नीलाम हुई गलियों में,
लज्जा नत सिर धुनती थी
फटती साड़ी चोली में।

बच्चे दुधमुँहे बिलखते
दुल्हन की मेंहदी रोती,
सिर कटते नवयुवकों के
बूढ़ी माँ सुध बुध खोती।

पंजाब लुटा धन जन से
निर्मम नृशंस हत्याएँ,
लाखों के मालिक भारत
शरणार्थि वनकर आये।

मानव ने चपत लगायी
मानवता के ही मुँह पर,
इतिहास लिखेगा कैसे
सकुचा जाँयेंगे अक्षर।

इतना सब खोकर हमने
पाई स्वतन्त्रता प्यारी,
कुछ के घर जलते दीपक
कुछ की रातें अँधियारी।
अड़तालिस सन् भी आया
घावों पर नमक छिड़कता,
जनवरी तीस की सन्ध्या
बन गई सजग निष्ठुरता।
जनता के प्यारे बापू
गाँधी ने खाई गोली,
हिंसा ने 'नाथू' बनकर
खेली प्रांगण में होली।
"रघुपति राघव, हे! राम
सुबुद्धि देना हत्यारे को,
जीतेंगें सत्य अहिंसा
अमरत्व मिलेगा नर को।"
यह कहकर आँखें मूँदीं
संसार चकित था क्षण में,
प्रारब्ध राष्ट्र का वंचित
रवि डूबा अस्ताचल में।
नेहरू ने खोया साया
बढ़ चला भार कन्धों पर,
रक्षा विकास दोनों ही
नेतृत्व माँगते सत्वर।

एकादश सर्ग

महा प्रयाण

महाप्रयाण

अखिल विश्व में चढ़ा तिरंगा
गूँजी जयकारें भारत की,
धन्य धन्य 'मंत्री प्रधान'
जय 'भारत-रत्न' जवाहर की।

शोषण मुक्त किसान, भूमि पर
हरी हरी बालें लहराई,
पनघट झूमे, पायल रुनझुन
पंचरंगी चूनर मुस्काई।

कल कल में भर जीवन की लय
इठलाता गंगा का पानी,
उपवन उपवन डाली डाली
मचल उठी कलियों की बानी।

औद्योगिक विभूति रंग लाई
पंचवर्षीय योजनाओं में,
बाँध बने नदियों सागर पर
विद्युत शक्ति व्यय विकास में।

भारत का अध्यात्म चिरन्तन
विश्वशान्ति का अभिनन्दन कर,
मानवता का मान बन गया
पंचशील का अभिवर्षन कर।

रूस, चीन, अमेरिका सबसे
शान्तिदूत ने हाथ मिलाया,
मुस्कानों की शीतलता से
मित्र शत्रु का भेद मिटाया।

किन्तु चीन विश्वासघात कर
आया सीमा के प्रांगण में,
थर्राया लद्दाख हिमाचल
चीनी सेना थी त्रिशूल में।

काश्मीर की प्रिय वादी भी
एक बार सहमी सिहराई,
मौन हिमानी आँचल में
भर भर अंगार जगाने आई।

लड़ना तो उद्देश्य नहीं था
आत्म सुरक्षा ही करनी थी,
भारत को अपनी आशायें
शत्रुपक्ष में भी भरनी थी।

लौट गया आक्रामण उल्टा
जन जीवन हरषा हुलसाया,
जीवन की गति के प्रवाह में
मुस्काई अपनी ही छाया।

सन चौंसठ प्रारम्भ हुआ
गणतंत्र दिवस, दारुण निर्ममता,
नेहरू जी अस्वस्थ बनें, यह
जीवन की विषमयी विषमता।

किन्तु कार्यरत उत्साही ने
बाधाओं से हार न मानी,
वृद्ध युवक के मन में पैठी
दीवानी बन मौन जवानी।

मास मई की तिथि सताइस
कालशक्ति बनकर आई थी,
भारत माँ का राजदुलारा
वीर पुत्र वरने आई थी।

ऊषा रोई, रवि अँसुआया
यह कैसा था खेल नियति का,
टल पाई प्रयाण वेला कब
सोया शिथिल शरीर वीर का।

विद्युत गति सा कौंध गया यह
समाचार चहुँ ओर देश में,
नहीं रहे अब वीर जवाहर
ज्योति जगाई आत्म रूप में।

मानों प्रिय का स्वागत करने
'कमला' की बाँहे बढ़ती थीं,
दूर क्षितिज के मध्य सिन्दूरी
रेखा सी सँवरी उभरी थी।

यह शरीर का मिलन नहीं था
आत्मचेतना का स्पन्दन,
मुस्कानों के दीप जल उठे
मनुहारों में मधु सम्मोहन।

मिलन विरह में, विरह मिलन में
मौन प्रतीक्षा अकुलायी सी,
जीवन की स्वप्निल इच्छायें
शान्त रूह में भरमायी सी।

पहन फूल के हार चले जब
युगल दम्पति नभ गंगा में,
मेघ बढ़े, बदली घिर आई
बूँद बूँद झरती कानन में।

इधर सोचते भारतवासी
साथ हमारे नभ रोता है,
झंझा गर्जन और झकोर में
घाव कोई उर के धोता है।

यह नभ का ही दर्द नहीं था
धरणी का अन्तर अकुलाया,
आया था भूचाल अनोखा
कण कण डोला, अणु अँसुआया।

तीन मूर्ति का भवन शान्त था
जनता दर्शन को उमड़ी थी,
प्यारे लाल जवाहर के, मुख
पर अपूर्व छवि अनुकम्पित थी।

अन्तिम यात्रा बढ़ी, उठा शव
फूलों की वर्षा अविलम्ब,
कलियों में नीरव क्रन्दन की
करुण कहानी का प्रतिबिम्ब।

सोच रहा चढ़ता गुलाब
कैसे रोऊँ, कैसे मुस्काऊँ,
जीवन भर जिन हाथों ने चाहा
क्या आज उन्हें बिसराऊँ ?

रंग गुलाबी भार बन गया
उन गुलाब की पांखुरियों को,
वर्ण लाल का ही जब पीला
कौन सराहे सुन्दरता को।

जनता अपने भर भर आँसू
इन गुलाब की पांखुरियों में,
न्यौछावर करती नेता पर
महा प्रयाण भीगी घड़ियों में।

अखिल विश्व के प्रतिनिधि भी
फूलों की मालायें रखते थे,
धन्य, धन्य मानव भूषण
श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते थे।

चन्दन अगरु सजे चिता पर
फूलों सा शरीर घेरे में,
घृत आहुति लपटों में पलकर
सुरभित करती प्राण वायु में।

अमर 'शान्तिवन' बना जलाकर
शान्तिदूत की निर्मल काया,
अस्थिशेष लेकर जनमानस
लुटा लुटा नीड़ों में आया।

अंतिम इच्छा जननेता की
बिखरी राख़ नदी खेतों में,
मरकर भी जीवित हैं वह
अणु अणु कण कण के स्पन्दन में।
रोता रोता भी मुस्काया
तट संगम त्रिवेणी धारा का,
दिव्य लोक की अखिल दिव्यता
छलकाती वैभव जीवन का।
गर्वित था 'प्रयाग' मन ही मन
जन्म मरण था सफल योगि का,
नाम जुड़ा है साथ 'लाल' के
पुण्यलाभ भारत भूमि का।
संगम में अंतिम प्रवाह ले
अस्थिकलष आगे बढ़ता था,
अँसुआया गुलाब धारा के
साथ साथ आहें भरता था।

द्वादश सर्ग

इन्दिरा

इन्दिरा

नियम सृष्टि का आना जाना
किन्तु मिटी कब यश गाथा है,
जीवित हैं युग पुरुष 'जवाहर'
किरण 'इन्दिरा' अभिलाषा है।

नव किसलय में नवल पुष्प सी
नव पराग की मृदु अरुणाई,
'कमला' की अपूर्ण इच्छायें
रूप 'इन्दिरा' का ले आई।

दिनकर का ले तेज रूप में
चन्द्रकिरण की नवल ज्योत्सना,
नयनों में अनुराग विरागी
संकल्पों की सजग कल्पना।

ऊर्ज भाल पर विधि ने लिख दी
प्राप्ति अभीप्सित मनुहारों की,
अधरों में स्वर राष्ट्रगान के
वक्षस्थल चेतना लहर की।

हाथों में गांडीव कार्य का
चरणों में गति की गरिमा है,
चुम्बक सा व्यक्तित्व मनोहर
अलकों में पौरुष प्रतिमा है।

किन्तु दया ममता उदारता
नारी की निधियाँ सब उर में,
दीन हीन शोषित पाते है
स्नेह सरलता कल्याणी में।

अड़तालिस वर्षों तक सींची
जो डाली थी वनमाली ने,
उपवन की श्री बन मुस्काई
उजियाली दी भारत माँ ने।

सौ पुत्रों से अधिक पुत्री ने
नाम बढ़ाया 'नेहरू' कुल का,
बनी 'प्रधानमंत्री' एक नारी
नवयुग आया अनुशासन का।

गाँधी नेहरू की आशायें
पुलक पुलक विहँसीं सरसाईं,
स्वतन्त्रता को जीवन देने
मानों 'लक्ष्मीबाई' आईं।

राष्ट्रीकरण कर अधिकोषों का
जनता का अधिकार बढ़ाया,
साधनहीन विवश ने पाई
विश्वासों की शीतल छाया।

काँग्रेस पनपी उष्णाई
ले आधार समाजवाद का,

जन जन में उत्साह बढ़ चला
दायित्वों और कार्यभार का।
चिर नवीन सपना पलता है
अँसुआई हँसती आँखों में,
जीवन का संदेश ढल रहा
कार्यशील नारी हाथों में।
एक नया उद्‌बोधन लेकर
'बंगला देश' समस्या आई,
लाखों बेघरबार त्रस्त, निर्मम
निर्मोही ! लाज न आई।
दुष्ट दुशासन 'पार्क' विवश द्रौपदी
का चीर उतार रहा था,
अबलाओं की लाज लुट रही
व्याल खड़ा फुंकार रहा था।
बंगला प्रतिभाओं के वद्ध हुए
छलनी दानव हिंसा से,
युवक मृत्यु की गोद खेलते
बच्चे बूढ़े शान्त शयन से।
भारत कृष्ण बना धरणी ने
अपना आँचल हाथ बढ़ाया,
सीमा पर आये शरणारथि
'इन्दिरा' माँ ने धीर बँधाया।

अपने मुँह का कौर दिया, आँसू
पोंछे शोषित क्रन्दन के,
जीवन ने पाया नव-जीवन
कलुष धुले पापी 'पाहन' के।

अत्याचारी मौन नहीं था
उसको मनमानी करनी थी,
छलना प्रवंचना धागों से
व्यूह चक्र रचना करनी थी।

तीन दिसम्बर सन् इकहत्तर
पाक आक्रमण हुआ देश पर,
वीर पुत्री दुर्गा बन आई
वाहिनियों को दिया विजय वर।

भारत एक बना संकट में
'इन्दिरा' का संदेश अमर है,
जाग उठा कण कण जड़चेतन
शांति क्रान्ति का गठबंधन है।

'विजयन्तों' 'विक्रान्तों' को बल
मिला नारी के आदर्शों में,
'पाक' सैन्य सिमटा अकुलाया
विजय दुन्दुभी जल थल नभ में।

चौदह दिन का युद्ध बनेगा
गौरव गाथा इतिहासों की,

स्वयं वीरता वरने आई
आन लड़ी भारत वीरों की।
'मानिकशा' का मान अमर है
रक्षक 'नन्दा' 'लाल' रहेंगे,
राणा, शिवा, प्रताप देश के
नहीं झुके हैं, नहीं झुकेंगें।
आत्मसमर्पण 'पाक' राज्य का
भारत ने पाया समझाया,
अब न कुचलना मानवता को
बनकर कठपुतली या साया।
कोई लालच लोभ नहीं था
भारत की भोली जनता को,
अपना देश सँभालो साथी
शुभ कामना देश 'बँगला' को।
विजय दिवस, गणतंत्र दिवस
सुधियों के दीप जलाता आया,
'भारत रत्न' 'इन्दिरा गाँधी'
का सम्मान सजगता लाया।
अखिल विश्व का था विरोध, दृढ़
'इन्दिरा' अचल नहीं सिहराई,
'भारत' के आदर्शों ने कर्त्तव्य
समझकर लड़ी लड़ाई।

नेत्री का नेतृत्व सफल है

गूथे फूल सभी माला में ;

धनिक, श्रमिक, सबमें एक लय-सम

वृद्धि मिली नित समृद्धि में।

'महिलावर्ष' परीक्षा बनकर

आया इस महान महिला को ;

कुछ विरोधियों ने आगे बढ़

न्यायालय से यह अपील की।

"नहीं शुद्ध साधन चुनाव के

मर्यादा टूटी भारत की,

नेता ही जब भ्रष्ट, दुहाई

कौन करेगा जन गण मन की।

किन्तु 'इन्दिरा' का अपूर्व साहस

चुनौतियों से टकराया,

आपत्कालीन अधिकारों ने

एक नया कौतुक दिखलाया।

संविधान क्यों रहे अछूता

परिवर्तन जब नियम सृष्टि का,

'राष्ट्रपति' 'मंत्री प्रधान' पर

अंकुश कैसे विरोधियों का ?

लोकतंत्र की भी सीमा है

शासन तो शासन से होगा,

गृह युद्धों, द्वन्दों से क्या फिर
विदेशियों का स्वागत होगा ?
जनता का विश्वास हृदय में
लेकर बढ़ी शक्ति नारी की,
झुके विरोधी और अन्यायी
अडिग 'प्रधानमंत्री' भारत की।
अरबों रुपया काले धन का
अब विकास का पथ दिखलाता,
नहीं करों का बोझ किसी पर
जन-जीवन हर्षित हुलसाता।
अनुशासन, शिक्षा, बेकारी
सबमें नवल चेतना जागी,
प्रजातंत्र की परिभाषायें
आज बन गईं सुभग सुहागी।
अबला होकर भी सबला है
नारी होकर भी नर सी है,
ऐसी शक्तिमयी को पाकर
स्वतन्त्रता वरदानमयी है।
नवयुग का आह्वान किया है
जनता ने बढ़कर भारत की,
किन्तु घरों में और समाज में
अब भी जयकारें शोषण की।

प्रश्न कौंध जाता है मन में
क्या 'नारी' बनना ही शाप है ?
सब कुछ देकर भी लाँछन ले
स्नेह पुण्य भी महापाप है।
मूल्य बन चुका अब 'दहेज'
जिससे वर सुभग खरीदे जाते,
और निर्धन की कन्याओं के
भाग्य अंधेरों से भर जाते।

वधु बनकर भी अभागिनो को
पग पग पर सब सहना होता,
अन्यायों, अनीतियों के घूँटों
को चुप चुप पीना होता।
'नारी' का पर्याय बन गया
क्यों शोषण, पीड़न, उत्पीड़न ?
बन्धन में ही मुक्ति मिलेगी
ऐसा क्यों उसको आश्वासन ?
निर्वाचन अधिकार मात्र ही
नहीं समस्याओं का हल है,
परिवारों में और समाज में
जागृति ही जीवन सम्बल है।
स्नेह, सहानुभूति, समता से
अबला नारी सबल बनेगी,

युग युग के अभिसाप मिटा दो
चिरबन्दिनी सजल विहँसेगी।
देख रही भारत की महिला
सपनों की अर्गला सुहानी,
कब वैषम्य मिटे युग युग का
कब मुस्काये करुण कहानी।
'कमला' ने देखा था सपना
नारी वर्ग की समानता का,
स्वप्न, सत्य दोनों एकत्रित
चित्र सजीव बना 'इन्दिरा' का।
परिवर्तन की अमिट कहानी
सृष्टि कह रही क्यों युग युग से,
तेजस्वी दिनकर की किरणें
भी भर जातीं रजनी तम से।
'इन्दिरा' की यशगाथा में भी
मानों छाया पड़ी 'ग्रहण' की,
प्रश्नचिन्ह सब कार्य बन गये
व्यापीं भावनायें संशय की।
झंझा बन सतहत्तर के चुनाव
ने 'इन्दिरा' को झकझोरा,
हार बन गई एक कहानी
शासन ने मुख अपना मोड़ा।

बादल से छा गये सूर्य पर
जनता भ्रमित चकित बौराई,
मिली जुली सरकार चलेगी
कितने दिन यह समझ न पाई।

भ्रष्टाचार व्याल बन आया
तस्कर बन बैठे महाराजा,
चोरी बजारी, रिश्वतखोरी
ने बजवाया अपना बाजा।

सोना चाँदी चढ़े सीढ़ियाँ
खान पान का रंग भी बदला,
मँहगाई की सीमाओं में
आसमान का रंग भी धुंधला।

हाहाकार कर उठा जन जन
त्राहि त्राहि मच गई चहूँ दिश,
अन्यायों, अत्याचारों से
अकुलाये स्वर बढ़े अहर्निश।

हड़तालों में रोष झलकता
सुख सन्तुष्टि स्वप्न बन गये,
रक्षक ही बन बैठे भक्षक
और शोषण के दीप जल गये।

मात्र 'कमीशन' बैठाने से
ही क्या सरकारें चलती हैं,

समस्याएँ बिन समाधान क्यों
आश्वासन स्वर में छलती हैं।
यह कैसा दुर्भाग्य देश का
जनता छली गई 'जनता' से,
अर्थ न्याय की लड़ें लड़ाई
क्यों न सभी मिल मानवता से।

'राष्ट्रपति' के स्वर में गूँजा
'मध्यावधि' चुनाव उद्‌घोषण,
लोकतंत्र की बजी दुन्दुभी
'सत्ता बदलो' का आरोहण।

सन अस्सी के नव-चुनाव ने
इतिहासों का रुख मोड़ा है,
'इन्दिरा' की जयगाथा ने
सदियों का मापदंड तोड़ा है।

जनता ने अपनी आशायें
'इन्दिरा' आँचल में भर दी हैं,
शोषण, उत्पड़ीन की आँखें
अंसुआई होकर हँस दी हैं।

'प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी'
'भारत' का आदित्य बनी हैं,
शपथ ग्रहण का पावन अवसर
शुभम् मकर संक्रांति घनी है।

नभ सुमनों से आज बरसतीं
गाँधी नेहरू की आशीषें,
'इन्दिरा' नवयुग की कल्याणी
तुम शतायु हों 'भारत' विहँसे।

तुम्हें बचानी है मर्यादा
फिर काँटों का ताज पहनकर,
देश विदेश सभी थर्रायें
गूँज उठे जगदम्बा के स्वर।

अहंकार से दूर रहोगी
तो जन जन का स्नेह मिलेगा,
'भारत' के असंख्य बच्चों में
'माँ' तेरा वात्सल्य खिलेगा।

काँग्रेस का चढ़ा तिरंगा
देश विदेश सभी पुलकित हैं,
विश्वासों के दीप जल उठे
नयनों में सपनें सुरभित हैं।

दृढ़ संकल्प सुधारों का ले
पग कल्याणी के बढ़ते हैं,
मानवीय आशाओं के अंकुर
पुष्पांजलि में पलते हैं।

एक दिन फिर से अखिल विश्व में
'भारत' की जयकारें होंगी,

नारी शक्ति के दीप जलेंगे
पूजा में मनुहारें होंगीं।
अबला अबला कहकर तुमने
जिस 'नारी' को दुत्कारा है,
उसने दे देकर हुंकारें
अन्यायों को संहारा है।
अबला नारी सबल बनेगी
आँसू अंगारें उगलेंगे,
जीवन का संगीत सजे फिर
स्नेहिल बन्धन मुस्कायेंगें।
नारी प्रतिनिधि 'इन्दिरा गाँधी'
आदर्शों की चिर गरिमा हैं,
भारत माँ का भाल समुन्नत
विहँसी युग युग की महिमा है।
'ज्योति' प्रज्जवलित रहे युगों तक
गौरव गाथायें अंकित हों,
मेरे बाद काव्य की किरणें
आत्मरूप में ज्योतिर्मय हों।
'ज्योतिपुंज' में दीप्त ज्योति है
नेहरूकुल की और भारत की,
मुखर और अनबोले स्वर में
अभ्यर्थना भावनाओं की।

अमर 'जवाहर' 'इन्दिरा' गाथा

स्वर्णाक्षर में 'ज्योतिपुंज' के,

'कमला' का उत्सर्ग प्रेरणा

काव्य निकट जगती जीवन के।

वीणापाणि माँ जान अकिंचन

काव्य साधिका को सिद्धि वर,

दीप सूर्य के सन्मुख रखकर

नयन मुँदे, मनुहार भरे स्वर।

'प्रतिभा' की निर्झरिणी ने बाँधा

असीम को फिर ससीम में,

शुभ्र चेतना 'ज्योतिपुंज की

'ज्योति' जगाती जड़ चेतन में।

—प्रतिभा

"प्रतिभा कुटीर"
7-1-50/बी,
अमीरपैठ,
हैदराबाद

परिशिष्ट–1

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित "मेरी कहानी" के अन्तर्गत जो ऐतिहासिक तिथियाँ और संवेदनशील प्रसंग रहे

1. पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म काश्मीरी घराने में 14 नवम्बर सन् 1889 मार्गशीप बदी सप्तमी को इलाहाबाद में हुआ।
2. दस वर्ष की अवस्था में वह "आनन्द भवन" में आये।
3. नेहरूजी सन् 1907 के अक्टूबर के शुरू में कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज में पहुँच गये और बीस वर्ष की अवस्था में वहीं से डिग्री ली।
4. सन् 1912 की गर्मी में उन्होंने बैरिस्ट्री पास कर ली और सन् 1916 में बसन्त पंचमी के दिन दिल्ली में उनका विवाह श्रीमती कमला नेहरू के साथ हुआ। उस साल गर्मी के कुछ महीने उन्होंने काश्मीर में बिताये।
5. सन् 1925 की बसन्त ऋतु में श्रीमती कमला नेहरू बहुत बीमार पड़ गयीं। मार्च 1926 के शुरू में पंडितजी श्रीमती कमला नेहरू और पुत्री "इन्दिरा" के साथ बम्बई से वेनिस के लिये रवाना हुए।
6. 1 जनवरी सन् 1932 के दिन श्रीमती कमला नेहरू गिरफ्तार हो गई। पंडितजी के शब्दों में—"वह अपने को

1. "मेरी कहानी" पंडित जवाहरलाल नेहरू पृ. 15, 16, 21.
2. मेरी कहानी पृ. 29
3. मेरी कहानी पृ. 40
4. मेरी कहानी पृ. 65
5. मेरी कहानी —पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 214
6. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 340-341

पुरुषों के अत्याचारों से स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा करने वाली योद्धा समझती थी। दूसरी ओर उनमें हिन्दू-स्त्री के संस्कार भी प्रबल थे।"

7. 6 फरवरी को उसी वर्ष पिता पंडित मोतीलाल नेहरू का स्वर्गवास हो गया। तीन महीने बाद पंडित जी अपनी पत्नी और लड़की सहित लंका गये और वहाँ उन्होंने शान्ति और आराम से कुछ दिन गुजारे।

8. जून सन् 1934 में देहरादून जेल में पंडित जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मेरी कहानी" लिखनी प्रारम्भ की और आठ महीने में पूर्ण की। जुलाई-अगस्त में श्रीमती कमला नेहरू की हालत बड़ी तेजी से बिगड़ने लगी और पंडितजी से एकाएक देहरादून जेल छोड़ने के लिए कहा गया। एकमात्र पुत्री "इन्दिरा" भी शांति निकेतन से आ गई थी।

9. श्रीमती कमला नेहरू के सम्बन्ध में "मेरी कहानी" के अन्तर्गत पंडितजी के हृदयस्पर्शी उद्‌गार—"कमला के शरीर में केवल हड्डियाँ रह गईं थीं। उसका शरीर छाया मात्र मालूम पड़ता था। मेरे मन में उस दिन से लेकर आज तक के बरसों की सुधि आने लगी। शादी के वक्त मैं छब्बीस साल का था और वह करीब सत्रह बरस की। वह सांसारिक बातों से सर्वथा अनभिज्ञ निरी अबोध बालिका थी। यद्यपि हम दोनों एक दूसरे की तरफ आकर्षित हो रहे थे, लेकिन हमारा दृष्टिपथ जुदा-जुदा था और एक दूसरे में अनुकूलता का अभाव था।......... ....हमारी शादी के इक्कीस महीने बाद हमारी लड़की और एकमात्र सन्तान "इन्दिरा" पैदा हुई।"

---

7. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 349-350
8. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 779-780
9. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 781-782

10. इसके बाद उसकी बीमारी का दौरा शुरू हुआ और मेरा लम्बा जेल निवास। × × × वैवाहिक जीवन के अठारह बरस बाद भी उसके मुख पर मुग्धा कुमारी का भाव अभी तक वैसा ही बना हुआ था, प्रौढ़ता का कोई चिन्ह न था। × × × × वैवाहिक जीवन के अठारह बरस। लेकिन इनमें से कितने साल मैंने जेल की कोठरियों में और कमला ने अस्पतालों और सैनिटोरियम में बिताये। सचमुच ही इस समय जबकि मुझे उसकी सबसे अधिक आवश्यकता है, वह मुझे छोड़ तो न जायेगी। अरे! अभी-अभी तो हम दोनों ने एक दूसरे को ठीक तरह से पहचानना और समझना शुरू किया है।"

11. "मैं फिर "नैनी जेल" के अन्दर दाखिल हो गया। मुझे यह सूचना दी गई कि यदि मैं मियाद के बाकी दिनों के लिए राजनीति में भाग न लेने का आश्वासन दे दूँ तो मुझे "कमला" की सेवा-शुश्रुषा के लिए छोड़ा जा सकेगा। × × अक्टूबर के शुरू में मुझे फिर उससे भेंट करने के लिए ले जाया गया। उसे बहुत तेज बुखार था। विदा के समय उसने साहसपूर्ण मुस्कुराहट से मेरी ओर देखा और मुझे नीचे झुकने का इशारा किया। नजदीक आने पर उसने मेरे कान में कहा—"सरकार को आश्वासन देने की यह क्या बात है, ऐसा हरगिज न करना।"

12. "लॉसेन में 28 फरवरी 1936 को जब मेरी पत्नी की मृत्यु हुई, तब मैं उसके पास था। थोड़े दिन पहले ही मुझे खबर मिली थी कि मैं दूसरी बार कांग्रेस का सभापति चुना गया हूँ। मैं फौरन ही हवाई जहाज से हिन्दुस्तान लौटा। × × × लौटने के थोड़े दिनों बाद ही मुझे कांग्रेस के अधिवेशन का सभापति बनना पड़ा। × × ×

---

10. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 783-784
11. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 789-790
12. मेरी कहानी—पंडित जवाहरलाल नेहरू–पृ. 835-837

लेकिन रह-रहकर अगले कुछ महीनों में मैंने इस्तीफे के सवाल पर सोचा-विचारा। X X X आखिर-कार मैंने इस्तीफा देना ही तय किया और अपने इरादे की खबर गाँधीजी को भेजी।"

पंडित जवाहरलाल नेहरू का मस्तिष्क एक राजनीतिक का था तो उनका हृदय संवेदनशील साहित्य-कार का था। जैसा कि "मेरी कहानी" के प्रारम्भ में भी उन्होंने लिखा है—"कमला को जिसकी अब याद ही रह गई।" भावना और कर्त्तव्य से उद्वेलित यह पवित्र प्रेम विरह के ताप से और भी अधिक निखर उठा है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में "कमला" "जवाहर" की प्रेरणा की शक्ति थी।

परिशिष्ट–2

कांग्रेस के इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा का सम्बन्ध काव्य की पृष्ठभूमि और वर्णित सन्, तिथियों से है। प्रस्तुत प्रसंग "संक्षिप्त कांग्रेस का इतिहास" और "कांग्रेस का इतिहास" द्वितीय और तृतीय खंड लेखक डॉ० बी० पट्टभि सीतारामण्या, से उद्धृत हैं।

---

1. सन् 1857 के बाद भारतवर्ष मन ही मन किसी अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता का अनुभव कर रहा था। यह तो अभी तक एक रहस्य ही है कि अखिल भारतीय कांग्रेस की कल्पना वास्तव में किसके मस्तिष्क से निकली ? जो भी हो "मि० ए० ओ० ह्यूम" ने 23 मार्च सन् 1885 में इसके सम्बन्ध में पहला नोटिस जारी किया जिसमें बताया गया कि अगले दिसम्बर में पूना में, 'इन्डियन नेशनल यूनियन' का पहला अधिवेशन किया जायेगा।

   श्रीमती बेसेंट ने अपनी 'हाउ इन्डिया फौट फॉर फ्रीडम' नामक पुस्तक में इसका अत्यन्त रोचक वर्णन किया है—'लेकिन पहला अधिवेशन पूना में नहीं हुआ और यह ठीक समझा गया कि परिषद् जिसे अब कांग्रेस कहते हैं, बम्बई में की जाय। 28 दिसम्बर सन् 1885 को दिन के बारह बजे गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज के भवन में 'कांग्रेस' का पहला अधिवेशन हुआ।

2. गाँधीजी ने कांग्रेस के बारे में दावा करते हुए कहा था—'यदि मैं गलती नहीं करता हूँ तो कांग्रेस भारतवर्ष की सबसे बड़ी सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है। मेरे लिए यह

---

1. संक्षिप्त कांग्रेस का इतिहास—पृ. 7
2. संक्षिप्त कांग्रेस का इतिहास—पृ 14

बताना खुशी की बात है कि उसकी उपज आरम्भ में एक अंग्रेज मस्तिष्क में हुई। ए० ओ० ह्यूम को हम कांग्रेस के पिता के रूप में जानते हैं।

3. सन् 1906 में दादाभाई नौरोजी कलकत्ते के अधिवेशन के सभापति हुए। बंग भंग के कारण देश भर में बहिष्कार की भावना छाई हुई थी।

4. जुलाई सन् 1914 में महायुद्ध छिड़ गया और इस वर्ष की काँग्रेस में स्वशासन की माँग फिर की गई। सन् 1916 और 1917 में स्वराज्य के मसविदे को लेकर सारे देश में एक राष्ट्रीय जागृति पैदा हो गई थी। 'होमरूल' का विराट आन्दोलन भी बहुत लोकप्रिय था।

5. सन् 1919 की फरवरी में 'रौलट बिल' ने देश को अपना दर्शन दिया और 13 अप्रैल सन् 1919 को जाँलियाँवाला बाग में एक बड़ी भारी सभा हुई। जनरल डायर ने घुसते ही गोली चलाने का हुक्म दे दिया। इसमें हजारों व्यक्ति मारे गये और घायल हुए।

6. 17 नवम्बर सन् 1921 को युवराज के भारत आने पर सारे उत्सवों का बहिष्कार किया गया। लालाजी पंडित मोतीलाल नेहरू, पंडित जवाहरलाल नेहरू, और सपरिवार देशबन्धु दास जेल में बन्द कर लिए गये।

7. 8 नवम्बर सन् 1927 को भारत में 'साइमन कमीशन' की घोषणा की गई। काँग्रेस तथा अन्य पार्टियाँ कमीशन की नियुक्ति से इसलिए नाराज हुई कि उसमें एक भी भारतीय नहीं रखा गया था। 3 फरवरी सन् 1928 में कमीशन बम्बई में आकर उतरा। उस दिन भारत भर में

---

3. संक्षिप्त कांग्रेस का इतिहास—पृ. 19
4. ,, ,, ,, पृ. 68-76
5. ,, ,, ,, पृ. 90-94
6. ,, ,, ,, पृ. 121
7. ,, ,, ,, पृ. 166—178

हड़ताल मनाई गई और 'साइमन गो बैक' के नारे लगाये गये। 28 सितम्बर सन् 1929 को लखनऊ महासमिति की बैठक में पं० जवाहरलाल नेहरू को बहुमत से सभापति चुन लिया गया।

8. 26 जनवरी सन् 1930 के दिन पूर्ण स्वराज्य दिवस मनाने का निश्चय किया गया। 14, 15, 16 फरवरी को कार्य-समिति की बैठक साबरमती में सविनय अवज्ञा के सम्बन्ध में हुई। 5 अप्रैल सन् 1930 को डंडि पहुँचकर गाँधीजी ने खुल्लम-खुल्ला नमक कानून तोड़ा।

9. सितम्बर 1939 को महायुद्ध छिड़ गया और 4 दिसम्बर 1941 को पंडित जवाहरलाल नेहरू को जेल से मुक्त किया गया।

10. 19 फरवरी सन् 1942 को गाँधीजी ने नजरबन्दी की हालत में आगाखाँ महल में सामर्थ्य के अनुसार एक उपवास प्रारम्भ किया। यह उपवास 21 दिन का था।

11. गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद उनका एक लेख प्रकाशित किया गया जिसमें उन्होंने यह भी लिखा था—"मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मेरे निर्माण की इस पार्श्व भूमिका को ध्यान में रखकर हिन्दुस्तान से हट जाने के मेरे उस सूत्र को पढ़ेंगे, जो आम तौर पर 'क्विट इंडिया' यानी 'भारत छोड़ो' के नाम से पुकारा जाता है।"

12. नई दिल्ली में 'आल इन्डिया काँग्रेस कमेटी' का एक विशेष अधिवेशन 15 जून सन् 1947 को दिन के 2 बजे हुआ। उसमें यह भी कहा गया कि कमेटी ब्रिटिश सरकार के इस

---

8. संक्षिप्त कांग्रेस का इतिहास—पृ. 193
9. कांग्रेस का इतिहास—दुसरा खंड—पृ. 326-327
10. कांग्रेस का इतिहास—तीसरा खंड—पृ. 25-26
11. सं० इतिहास पृ. 438
12. सं० इतिहास पृ. 563

निश्चय का स्वागत करती है कि आगामी अगस्त तक सारे अधिकार पूर्णतया हिन्दूस्तानियों को सौंप दिये जायेंगे।

13. इसके बाद 15 अगस्त सन् 1947 के पुण्य दिवस पर भारत स्वतन्त्र हो गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। उन्हें "भारत रत्न" की गौरवान्वित उपाधि से सम्मानित किया गया। राष्ट्र को विकास और शान्ति के पथ पर अग्रसर करने में पंडित जी ने सराहनीय सहयोग दिया। 27 मई 1964 के दिन भारत का–"जवाहर सूर्य" अस्त हो गया और संसार में शोक की लहर व्याप्त हो गई।

डेढ़ वर्ष तक श्री लालबहादुर शास्त्री "भारत" के प्रधानमंत्री रहे। तत्पश्चात् सन् 1966 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की सुपुत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भारत के प्रधानमन्त्री पद को सुशोभित किया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर 'इन्दिरा जी' देश की आन्तरिक और बाह्य समस्याओं का समाधान कर रही थी कि बंगला देश के संदर्भ में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। चौदह दिन के इस युद्ध में भारत की विजय श्रीमती इन्दिरा गाँधी की दूरदर्शिता का अद्वितीय उदाहरण है। "भारत रत्न इन्दिरा गाँधी" को अनेकानेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सन् 1975 में उन्होंने स्थिति सुधारने के लिए आपात्कालीन अधिकारों का प्रयोग किया।

सन् 1977 के चुनावों में 'जनता पार्टी" सत्ता में आई। श्री मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमन्त्री बने। अनेकानेक पार्टियों और विचारधाराओं का संगम बनी "जनता पार्टी" अधिक दिन तक शासन का भार वहन न कर सकी और सन् 1979 के मध्य में ही प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई को त्यागपत्र देना पड़ा। अस्थायी सरकार का प्रतिनिधित्व श्री चरण सिंह ने किया और मध्यावधि चुनाव की उद्घोषणा राष्ट्रपति के स्वर में गूँज उठी।

जनवरी सन् 1980 के मध्यावधि चुनाव में अपूर्व बहुमत से श्रीमती इन्दिरा गाँधी की पार्टी "कांग्रेस आई" विजयी रही और 14 जनवरी मकर संक्रांति के पावन पर्व पर श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने पुनः प्रधानमन्त्री पद की शपथ ग्रहण की। आज राष्ट्र की आशा विश्वासमयी दृष्टि उनकी ओर लगी है। ईश्वर करे वह दीर्घ काल तक इसी प्रकार भारतीय जनता का पथ-प्रदर्शन करती रहें।

"जय-हिन्द"

"जय-भारत"